

॥ दधिमथ्ये नमः ॥

श्री दधिमती माताजी गोठ मांगलोद

आरती संग्रह

मा दधिमती (भगवती) की आरती, भजन, चालीसा,
छंड और इतिहास का अनूठा संग्रह



वंश विधाता महामाया दधिमती,
जनम पूर्वला वचन पर मां धरा मारु में निसरी
रटता रटता शरण होगी, धेनु सारी विसरी
कहे गोपाल जगदम्बे ज्योति भू वट विसरी

प्रकाशक

श्री नंद के गोपाल बाल पुजारी

ग्राम दुगरस्ताऊ तह. जायल जिला नागौर राजस्थान

मूल्य -25 रुपये

॥ कर्मणे वाधिकानकते, मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफल लेतु भूमति भुद्गोऽकृत्वं कर्माणि॥



स्व. श्री नंदलाल पाराशर (पुजारी)
पूज्य दादाजी को सादर श्रद्धांजलि

ओ३म् त श्रत्वा दध्यङ्ग ऋषि : पुत्रईघे,
अथर्वण वृत्रहणं पुरन्दरम् । (शुक्ल यजुर्वेद)



स्व. श्रीमती शारदा देवी पाराशर
पूज्य माताजी को सादर श्रद्धांजलि

श्रद्धावनत् दमेषा, मुकेषा, बालकृष्ण पाराशर, दुग्धत्ताङ्

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्री गजानन्द स्तुति

ओ३म् गजानन्द भूत गणाधि सेवितम्,
कपित्थ जम्बू फल चारू भक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाश कारकम्,
नमामि विघ्नेश्वर पाद पंकजम् ।
सर्व विघ्न विनाशाय सर्व कल्याण हेतवे,
पार्वती पुत्र पुत्राय गणेशाय नमो नमः ॥

ऋ ॥ ४ ॥

श्री गणपति आरती

जय गणेश जय गणेश देवा ।
माता जांकी पार्वती पिता महा देवा ॥ जय ॥
लड़ुवन को भोग लगे संत करे सेवा ।
पान चढ़े पुष्प चढ़े और चढ़े मेवा ॥ जय गणेश ॥
एक दंत दयावन्त चार भुजा धारी ।
मस्तक पर सिन्दुर सोहे, मूसे की सवारी ॥ जय गणेश ॥
अंधन को आंख देत कोद्धियन को काया ।
बांझन को पुत्र देत निर्धन को माया ॥ जय गणेश ॥
दीनन की लाज रखो शंभु सुत वारी ।
कामना को पूरी करो जाऊँ बलिहारी ॥ जय गणेश ॥

ऋ ॥ ५ ॥

गायत्री मंत्र

ओ३म् भुर्भुवः स्वः । तत्सतवितुवरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धीयो यो नः
प्रचोदयात् ॥

ऋ ॥ ६ ॥

आश्वती भगवन्

शान्ति पाठ

ओ३म् द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथ्वी शांतिरायः शान्तिरोषधयः ।
वनस्पतयः शान्ति विश्वदेवाः शान्ति ब्रह्म शान्तिः सर्व शान्तिः
शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्ति रेधि । ओ३म् शान्तिः शान्तिः शान्तिः ।

ऋग्वेद गायत्री काव्य भगवन्

ऋग्वेद गायत्री काव्य गायत्री काव्य

श्री दधिमथी अष्टापदी

जय जय जनक सुनन्दिनी हरि वंदनी है, हरि वंदनी है।
दुष्ट निकंदनी मात जय जय विष्णु प्रिये ॥ १ ॥
सकल मनोरथ दोहिनी, जग सोहिनी है।
पशुपति मोहिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ॥ २ ॥
विकट निशाचर कुन्थिनी, दधिमथनी है।
त्रिभुवन ग्रन्थिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ॥ ३ ॥
दिवानाथ सम भासिनी, मुख हासिनी है।
मरुधर वासिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ॥ ४ ॥
जगदंब जय कारिणी, खल हारिणी है।
मृग रिपु चारिणी मात, जय जय विष्णु प्रिये ॥ ५ ॥
जगत पालिनी, जय जय विष्णु प्रिये ।
खल दल दालिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ॥ ६ ॥
तेज विजित सौदायिनी, हरि भासिनी है।
अहि गज गामिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ॥ ७ ॥
धरणी धर सुसुहायिनी, श्रुति गायिनी है।
वांछित दायिनी मात, जय जय विष्णु प्रिये ॥ ८ ॥

ऋग्वेद गायत्री काव्य भगवन्

ऋग्वेद गायत्री काव्य गायत्री काव्य

॥ श्री शिव पंचाक्षर स्तोत्रम् ॥

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय,

आश्रुती स्त्रवह

भरमाडंगरमाय महेश्वराय ।
 नित्याय शुद्धाय दिगम्बराय
 तस्मै न काराय नमः शिवाय ॥ १ ॥
 मंदाकिनी सलिल चंदन चर्चिताय
 नन्दीश्वर प्रमथनाथ महेश्वराय ।
 मन्दार पुष्प बहुपुष्प सुपूजिताय
 तस्मै म काराय नमः शिवाय ॥ २ ॥
 शिवाय गौरीवदनाब्जवृन्द
 सूर्याय दक्षाध्वरनाशकाय ।
 श्री नील कण्ठाय वृष ध्वजाय
 तस्मै शि काराय नमः शिवाय ॥ ३ ॥
 वशिष्ठ कुम्भोदभवगोतमार्य
 मुनीन्द्र देवार्चितशेखराय ।
 चन्द्रार्क वैश्वानर लोचनाय
 तस्मै व काराय नमः शिवाय ॥ ४ ॥
 यक्षस्वरूपाय जटाधराय
 पिनाक हस्ताय सनातनाय ।
 दिव्याय देवाय दिगम्बराय
 तस्मै य काराय नमः शिवाय ॥ ५ ॥
 पंचाक्षरमिदं पुण्यं यः पवेच्छिवसंनिद्यौ ।
 शिवलोकमवाजेति शिवेन सह मोदते ॥ ६ ॥
 ॥ इति श्रीमच्छङ्कराचार्य विरचितं शिव पंचाक्षर स्तोत्र संपूर्णम् ॥

शिव शक्ति वंदन

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारम् ।
 सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि ॥

आश्रुती व्यंग्यहृ

भगवान् श्री शिव

जय शिव ओंकारा, भज शिव ओंकारा।
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव अद्वंगी धारा ॥ ३ ॥ ओ३म् हर हर महादेव ॥
एकानन चतुरानन पंचानन राजै ।
हंसासन गरुडासन वृषवाहन साजै ॥ २ ॥ ओ३म् हर हर महादेव ॥
दो भुज चारू चतुर्भुज दशभुज अति सोहे ।
तीनों रूप निरखते त्रिभुवन—जन मोहै ॥ ३ ॥ ओ३म् हर हर महादेव ॥
अक्षमाला वनमाला रूङ्डमाला धारी ।
त्रिपुरारी कंसारी करमाला धारी ॥ ४ ॥ ओ३म् हर हर महादेव ॥
श्वेताम्बर पीताम्बर बाथम्बर अंगे ।
सनकादिक गरुडादिक भूतादिक संगे ॥ ५ ॥ ओ३म् हर हर महादेव ॥
कर मध्ये सुकमण्डल चक्र शूलधारी ।
सुखकारी दुखहारी जग—पालनकारी ॥ ६ ॥ ओ३म् हर हर महादेव ॥
ब्रह्मा विष्णु सदाशिव जानत अविवेका ।
प्रणवाक्षर में शोभित ये तीनों एका ॥ ७ ॥ ओ३म् हर हर महादेव ॥
त्रिगुणस्वामिकी आरति जो कोई गांव ।
भणत शिवानन्द स्वामी वांछित फल पावै ॥ ८ ॥ ओ३म् हर हर महादेव ॥



श्री दधिमती माताजी को कुल देवी रूप में
पूजने वाली जातियों की गोत्रावली निम्न है-

जाट समाज - 1. बिड़ियासर 2. चांगल 3. मौगलोड़ा 4. रिणवाँ 5. डिडेल
6. ईनाणियाँ 7. फिडौदा 8. दुगरत्तास 9. छेड़ 10. छोलिया 11. लटीवाल
12. वैडा 13. बैरा 14. नैणवा 15. झूकिया 16. खोखर 17. गौरा 18. ठाका
19. जाखड़ 20. सिंवर 21. खोजा 22. ठोलिया 23. घटेला 24. कंकड़ावा
25. गोदारा 26. पूनियाँ 27. मंडीवाल 28. थालोड़ 29. महरिया 30. ढाका
31. चोयल 32. जलवाणिया 33. धायल 34. भाकर 35. कमेडिया 36. चांदू
37. बासठ 38. बांगड़वा 39. मंडीवाल 40. रुल्याणियाँ 41. बुगालिया 43.

रायल 44. जाँखड 44. दन्तुसलिया 45. लोमरोड़ 46. खोखर 47. मुन्डेल 48. मामडोदा 49. बौगडा 50. कावडिया 51. सरडियां 52. जलामल्या 53. बापोडिया 54. निवाद 55. बांता 56. पिचक्या 57. मीया 58. धोचक 59. डूड़ी 60. राड 61. रोयल 62. नगवाडिया 63. डारा 64. मंडा 65. छरंग 66. बाजीया 67. लिल 68. मील 69. बंठा 70. खदाल 71. चोटिया 72. रलिया 73. चोचलीया 74. गोठीया 75. राव 76. सारण 77. खुड़खुड़िया 78. रलिया 79. सिलगावां 80. ततुवाल 81. सोमडवाल 82. थोरि 83. मोरडा 84. सदावत 85. चरवा 86. धोटिया 87. बुगासरा 88. रोज 89. सिरोहिया 90. लवेच्छ 91. हुड़ा 92. फरड़ोद 93. ज्याणी 94. भंवरीया 95. कमेडिया 96. तोण 97. बरणगांवा 98. बाटण 99. धतरवाल 100. बेणीवाल 101. कुलकगर 102. रेनवा 103. सुण्डा ।

आहेरवरी समाज- 1. बाहेती 2. मणियार 3. जाखोटिया 4. इनाणियां 5. बलदता 6. डागा 7. रायगांधी 8. लोहिया 9. चेचानी 10. गांधी 11. करवा 12. भटाडिया 13. पाटोधा एवं अन्य 14. चरखा 15. असावा 16. कचोलिया 17. गेलडा 18. झंवर, 19. लोहिया, 20. बहेती, 21. अटल, 22. खत्री

अन्य जातियां – 1. राजपूत (पुंडोर) 2. सैनी 3. कुम्हार 4. रेगर 5. खटीक (दायमा) 6. माली 7. खियालियाँ पठान 8. जांगीड़ 9. आचारि दायमा 10. गौरी 11. भंडारी 12. चौरडिया 13. गोलचा 14. गोदिया

ओसवाळ जैन समाज- 1. भुतोडिया 2. गेलडा 3. अत्यावा 4. औसवाल 5. गिलहड़ा ।

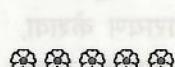
संपूर्ण छाडिच समाज- सभी गौत्र

दुग्धाभिषेक का समयः प्रातः 4 बजे से सुबह 8 बजे

आरती समयः मंगला आरती प्रातः 5 बजे, श्रृंगार आरती 11 बजे भोग संध्या आरती— सूर्यास्त के बाद, शयन आरती रात्रि 9 बजे

किसी प्रकार की सहायता हेतु दधिमती सेवा पूजा अर्चना समिति से करे— 01583— 266241, 266346, 9414863847, 9460653025

पुजारी गोपाल कृष्ण पाराशर (दादा)



आश्रुती स्थंग्रह

प्रातः स्मरणीय मंत्रः

प्रातः उठते ही निर्झन श्लोक के साथ कर द्वशनि करना चाहिए-
करागे वसते लक्ष्मी कर मध्ये सरस्वती।

करमूले च गोविन्दः, प्रभाते कर दर्शनम् ॥

प्रातः काल उठकर जमीन पर पैर रखने के साथ निर्झन श्लोक
पद्धे-

समुन्द्र वसने देवी पर्वत स्तन मण्डले ।

विष्णु पत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे ॥

स्नान करते समय निर्झन श्लोक का उच्चारण करे-

वक्तुंड महाकाय कल्पान्तदहनोपम्

भैरवाय नमस्तुभ्यं हमुजां दामुर्हसी ॥

गंगे च यमुने चैव गोदावरी सरस्वती ।

नर्मदे सिंधु कावेरी जलेस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

भौजन करने से पहले निर्झन श्लोक पद्धे-

अन्नपूर्णे सदापूर्ण शंकर प्राण वल्लभे ।

ज्ञानवैराग सिद्धयर्थं भिक्षा देहि च पार्वती ॥

रात्रि में शथन से पहले निर्झन श्लोक पद्धे-

अच्युतं केशवं विष्णु हरि सोम जनार्दनम् ।

हसं नारायणं कृष्णं जपते दुः स्वप्नशांतये ॥

सब समय के लिए महामंत्र निर्झन श्लोक पद्धे-

श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे हे नाथ नारायण वासुदेव ।

मुझे आशा ही नहीं दृढ़ विश्वास है कि उपरोक्त मंत्रों का नित्य पाठ
करने वाला जीवन में सदैव सुखी रहेगा ।

✽ ✽ ✽ ✽ ✽

स्तुति

हे राम! पुरुषोत्तमा नरहरे नारायण केशवा,
गोविन्द गरुड़ध्वज गुणनिधे दामोदर माधवा;
श्रीकृष्ण: कमलापते यदुपते, सीतापते श्री पते,

आकृती भूषण

बैकुण्ठाधिपते चराचरपते लक्ष्मीपते पाहिमाम् ॥

आदौरामतमोवनादिगमनम् हत्वा मृगकांचनम्
बैदेही हरणं जटायु मरणं सुग्रीवसंभाषणम्।
बालिनिग्रहणं समुद्र तरणम् लंका पुरी दहनम्।
पश्चादभावण कुम्भकर्ण हननम् एतादि रामायणम्।

आदौ देवकी देव गर्भ जननम् गोपी गृहे वर्धनम्।
माया पूतन जीवतापहरणम् गोवर्धनो धारणम्।
कंसाच्छेदन कौरवादि हननम् कुन्ती सुता पालनम्।
एतद् श्रीमद्भागवत पुराण कथितम् श्री कृष्णलीलामृतम् ॥

कस्तुरी तिलक ललाट पटले वक्षरस्थले कौस्तुभम्।
नासाप्रे वर मौकिकं करतले वेणु करे कंकणम्।
सर्वाग हरिचंदन सुलिलिं कण्ठे च मुक्तावली।
गोपस्ती परिवेष्ठीतो विजयते गोपाल चूड़ामणि ॥

शांताकरम् भुजंगशायनम् पदमनाभम् सुरेषं।
विषधारं गगन सदृशं मेघवर्ण सुभांगम्।
लक्ष्मीकांत कमलनयनम् योगिभिध्योनगम्य।
वंदे विष्णु भव भयहरणं सर्वलोकेकनाथम् ॥



चौघड़िया मूहृत

सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय दिन व सूर्यास्त के पश्चात अगले दिन तक का समय रात में गिना जाता है। दिन व रात के समय को 8 से भाग देने पर जो भागफल आए वह एक चौघड़िया का समय होगा। लाभ अमृत एवं शुभ की चौघड़िया श्रेष्ठ फलदायक है। चर की चौघड़िया यात्रा एवं व्यापारिक कार्य के लिए शुभ है। उद्वेग, रोग एवं काल अशुभ फलदायक है।

आरती संग्रह

दिन का चौघड़िया (सूर्योदय से सूर्यास्त तक)

रात का चौघड़िया (सूर्यास्त से सूर्योदय तक)



भगवती स्तोत्र

जय भगवती देवी नमो वरदे, जय पाप विनाशिनी बहु फल दे,

जय शुभ निशुभ कपाल धरे, प्रणमामी तू देवी नराती हरे।

जय चन्द्र दिवाकर नेत्र धरे, जय पावक भूषित वस्त्र वरे,

जय भैख देह निलीन परे, जय अंधक दैत्य विशेष करे।

जय महिष विमर्दिनी शुल करे, जय लोक समस्तक पाप हरे।

जय देवी पितामह, विष्णु मते, जय भास्कर शक शिरो अवनते।

जय षण्मुख सायुध ईशनुते, जय सागर गामिनी शंभु नते,

जय दुःख दारिद्र विनाश करे, जय पुत्र कलत्र वि – वृद्धि करे।

जय देवी समस्त शरीर धरे, जय नाक विदर्शिनी दुःख हरे,

जय व्याधि विनाशिनी मोक्ष करे, जय वांछित दायनी सिद्ध करे।

एतत् व्यास कृतम स्तोत्रयः पठेत् नियत शुचीः।

गृहे वा शुद्ध भावेन प्रिता भगवती यदा।

(श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन हरण भव भय दारूणम्)

जगदंब अब विलंब मति कर मात जननी भगवती।

बहु जन्म में भटकत फिरया, अब तो दया कर मां भगवती दधमन्त।

तिहुँ लोक में प्रकाश तेरो, आदि शक्ति महासती।

दूर करदे तिमिर मेरो, प्रेम माया हो जा मती।

तू रमा मणि राधिका, तू ब्रह्म शक्ति सरस्वती।

मन बुद्धि मेरी शुद्ध कर दे, चरण में हय जा रती।

तू अटल ज्योति कालिका, तू ही है लक्ष्मी पार्वती।

ज्योति में तेरे ज्योत कर दे, जन्म फिर दीजे मती।

आरुतीस्त्रवृह

दास किशन स्तुति करके, प्रेम री लीला कथी।

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

देवी ध्यानम्

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसार सारं भुजगेन्द्र हारं।

सदा बसन्तम् हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामि।

हरिः ओ३म् यज्ञोन यज्ञमयजन्त देवास्तानिधम्माणि प्रथमान्यान्सन्।

तेहनाकम्महिमानः सचन्त यत्र पूर्वं साध्याः सन्ति देवा।

ओ३म् बारंबार कही सुनि न चिते दे सूती कहा नींद में।

क्या तूं काम लगी भवन में क्या तूं लगी ध्यान में।

क्या थारी मर्जी हमें है गरजी देवी जरा ध्यान दो।

सुन लो चित्त लगाय अब तो कीजे भलो भक्त को।

त्वमेव माता च पिता त्वमेव, त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणं त्वमेव, त्वमेव सर्वं मम देव देव।

सिंहा दुत्थाय कोपा धड़ति धड़ धड़ा धाव माना भवानी।

देत्यानां सहस्रपाती तड़ति तड़ तड़ा तोड़यन्ति शिरांसी।

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

तेषां रक्तं पिवन्ती घुटति घुट घटा घोटयन्ति पिशाचानां।

पीत्वा पीत्वा हसन्ती खखिल खिल खिला शांभवींमां पुनातु।

दें दें बुद्धि दें भवानी धन दे विद्या बल रथूल दें।

षट् कीर्ति वर दें कमत्र सुख दें दान सुपात्रश्च दें।

इच्छा भोजन दें गुरु स्मरण दें षट् कर्मदा नित्य दें।

विद्यारस रुचि दें हरि भजन दें मैया तेरे दर्शन दें।

माया कुंडलिनी किया मधुमति काली कला मानी।

मातंगी विजया जया भगवती देवी शिवा शांभवी।

शक्ति शंकर वल्लभा त्रिनयना वाघ वादनी भैरवी।

हृड़कारी त्रिपुरा पुरा गुणमयी माता कौमारीश्वरी।

या माया मधुकैटभ प्रमथिनी या माया महिषोन्मूलनी।

आत्मी संग्रह

या धूम्रक्षणा चंड मुँड मथिनी या रक्त बीजासनी ।
शक्ति शुभ निशुभ दैत्य दलिनी या सिद्धि लक्ष्मी परा ।
या दुर्गा नवकोटि मोक्षित सहिता मां पातु विश्वेश्वरी ।

दोहा

काया हंस बिना नदी जल बिना दाता बिना याचकाः ।
भ्राता स्नेह बिना फल ऋतु बिना धेनुश्च दुर्घो बिना ।
नारी पुत्र बिना नरो धन बिना, विद्या बिना ब्राह्मणा ।
एतो विजोतेना बिना दीपक बिना मंदिरा ॥
ब्रह्मां मुरारी त्रिपुरान्तकारी भानुः शशि भूमि सुतो बुधश्चः ।
गुरुश्च शुक शनि राहु केतवः सर्व ग्रहा शांति करा भवन्तु ।

✽ ✽ ✽ ✽ ✽

तर्जः - श्याम करेला बेड़ा पार

म्हारी दुर्गा करेली बेड़ा पार, दधिमती की महिमा अपार ।
गोठ मांगलोद गांव है जारी, ददमन्त की रचना न्यारी ।
हां ए अंबा मन्दिर बणियों है गुलजार। दधिमथी । 1 ।
सूरज साम्रेली पोल है छाजे निज मंदिर में आप बिराजो ।
हां ए अंबा दर्शन की बलिहार । दधिमथी । 2 ।
सिंह उपर सोहे असवारी, अधर थम्ब की महिमा भारी ।
हां ए अंबा मोहनी सूरत सुहाय । दधिमथी । 3 ।
चोक च्यार जहां बनी तिवारी, अधर थम्ब की महिमा भारी ।
हां ए अंबा मंदिर बणियो है गुलजार । दधिमथी । 4 ।
चीर केसरियां सोवे साड़ी, लहंगे जरकस वन्यो अति भारी ।
हां ए अंबा यज्ञ कुण्ड शुभकारी । दधिमथी । 5 ।
केशर खोल बनी अति सुंदर, कुंकुम बिन्दी है सिर ऊपर ।
हां ए अंबा कानों में कुंडल भलकदार । दधिमथी । 6 ।
कमर में कनडोरो है अति सुंदर, पग में भूषण बाजे नुपुर ।
हां ए अंबा कनठी है तिमणी चन्द्रहार । दधिमथी । 7 ।
मुख में बीड़ा पान रचावे, गले पुष्पन का हार धरावे ।
हां ए अंबा सिंह चढ़ी असवार । दधिमथी । 8 ।

चैत्र आसोज में मेला आवे, भक्त आपका ध्यान लगावे ।
हां ए अंबा दरसन पावे नर नार । दधिमथी । 9 ।
जात जड़ूलो सब कोई देवे चूरमो श्रीफल भोग लगावे ।
हां ए अंबा झारी में रूपयो कलदार । दधिमथी । 10 ।
पछिम कुंड बड़ा शुभकारी जहां महादेवजी की बनी है तिहारी ।
हां ए अंबा गोल पेड़ो है जल सूं अपार । दधिमथी । 11 ।
विधि से होवे पूजा तुम्हारी, परासर है शरण तिहारी ।
हां ए अंबा सुबुद्धि देवो माय । दधिमथी । 12 ।
वेद पुराणा में महिमा गाई ब्रह्मा विष्णु पार न पाई ।
हां ए अंबा महिमा तेरी अपार । दधिमथी । 13 ।
बालाराम है शरण तिहारी ।
हां ए अंबा मन चिता फल पाया । दधिमथी । 14 ।



स्तुति

धर्म चरण कमल को ध्यान देवो वरदान,
मोहे शिव रानी जय जय जगदंब भवानी ।
मस्तक पर मुकुट करता चमचम,
पैरों में पायल करती रिमझिम ।
हे कोटि सूर्य से तेज चमक रही साढ़ी । जय.....
तूं नव दुर्गा तारा काली, दुष्टों का दमन करने वाली,
भक्तों की इच्छा पूर्ण कर मनमानी । जय.....
ब्रह्मा विष्णु महेश वन भैरव है अगवानी । जय.....
विधि से पूजन करता चित्त से,
भक्तों का भंडार भरो वित्त से
अब करो महर जग जननी बन सेठानी । जय.....
जग में अद्भुत तेरी मायया, वेदों ने पार नहीं पाया,
थक गये खोजकर बड़े बड़े ऋषि मुनि ज्ञानी । जय.....
भक्तों का कारज सिद्ध करना, मैया लीना तेरा ही शरणा,

आश्ती भग्नह

अब नेक नजर कर देखो, मैया भक्तों के कानी। जय... ये नरसिंह मंडल का कहना है, भगवती भरोसे रहना है। गावे बद्री विस्सा जीवन व्यास रतानी। जय....

मां दधिमती की आराधना

कर दधिमथी का ध्यान देवो वरदान,
जगत कल्याणी, जय जय जगदंबा भवानी।
तूं मांगलोद की है माता, यश सकल विश्व में प्रख्याता,
तूं चमक रही ज्यों सूर्य तेज महारानी। जय।
मस्तक पर छत्र तेरे छाजे, सिंह वाहन अद्भुत राजे।
कर सोहे तेरे त्रिखंड त्रिशूल भवानी। जय।
अधर खंभ है अति भारी, मंदिर की शोभा है न्यारी,
यज्ञ कुण्ड का है अमृत पानी। जय।
तूं दुर्गा दधिमथी महामाया, भक्तों ने तेरा यश गाया,
थक गए खोजते तुमको मुनिवर ज्ञानी। जय।
मैया अद्भुत तेरी माया, वेदों ने भी पार नहीं पाया।
सेवत तुझको हरदम ऋषि मुनि ज्ञानी। जय।
सब देशों से सेवक आते, मन वांछित फल वे हैं पाते,
दर्शन से हो कल्याण, तेरे ब्रह्माणी। जय।
असोज चैत्र मेला भरता, निश दिन अखंड दीपक जगता,
वजती हैं नोपत द्वार तेरे शिवरानी। जय।
भक्तों का कारज सिद्ध करना, हम आए हैं तेरी शरण,
संकट सब विघ्न हरो, दधिमथी कहारानी। जय।
नित पूजन करता जो मन से संपन्न होय सुख अरु धन से,
सकल सिद्धि नव निधि की हो तुम दानी। जय।
दाहिमा सभा का कहना है दधिमथी भरोसे रहना है,
दाधीच रतन करे विनती जय जय जननी। जय।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

दधिमथी मां से प्रार्थना

दरशन दधिमत मात दीराई जो,
हित वित ध्यान धरीजो भवानी को ।
मांगलोद में विराजे गण ज्यूं गाते नोपत बाजे मैया,
शब्द हुयो छः सुरवानी को 2 हां ए अंबे । दरशन ।
उदयपुर से आयो परचौ पायौ मंदिर चिणायो ए राणो,
होद खिणायो ए भीठा पानी को, हां ए अंबे । दरशन ।
चार चौक जहां बनी तिवारी, वहां सोहे फुलवारी ए माता,
मोटो परकोटो शिखर कवाणी को, हां ए अंबे । दरशन ।
सेवक नित सेवे दरशन पावे भोग लगावे ए माता,
मुकुट जड़ाऊ ब्रह्माणी को, हां ए अंबे । दरशन ।
पोल चार, जहां खुली जो बारी, हो बणयो गुलजारो ए अंबे,
नर नारी पीवे छ अमृत पानी को, हां ए अंबे । दरशन ।
होम कुण्ड की छवि है न्यारी बड़ा ब्रह्मचारी ए अंबे ।
ध्यान धरे छ ब्रह्माणी को, हां ए अंबे । दरशन ।
कालूराव पर कृपा कीजो, दरशन दीजो, मान बढ़ाज्यो ए अंबे,
ध्यान धरे छ ब्रह्माणी को, हां ए अंबे । दरशन ।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

दधिमती मातेश्वरी का छन्द

छन्द गुण दधमथ का गाता, सकल की साय करो माता । टेर ।
दधिमथी मोटी महा माई, महर कर गोठ नगर में आई ।
गवाल्यो चरावत गाई, कहयो तुम बोलो मत भाई ।
अभी मैं बाहिर जो आऊँ, लोक में संपत वपराऊँ ।
दधिमथी बाहर निसरी, धुन्ध भई दिन रैन ।
हुई आवाज सिंह की, भिड़क भाग गई धेन ।
गवालो गऊ धेर लाता, सकल की साय करो माता ।
गवालो हो हो कर रयो, बचन देवी को भूल गयो ।
तभी देवी बाहर नहीं आई, गुप्त एक मस्तक पुजवाई ।
दधमथ की सेवा करे, जो कोई नर और नार ।
निश्चय होकर धरे ध्यान, तो बेड़ा कर दे पार ।

आकृती संग्रह

दुख दरिद्र दूर जाता, सकल की साय करो माता । छन्द ।
 गोठ एक मांगलोद माई, बिराजे दधिमथी महामाई ।
 जंगल में देवल असमानी, उसी को जाणे सब प्राणी ।
 छत्र बिराजे सोहनो, चार भुजा गल हार ।
 कानां कुँडल झिल मिले, आप सिंह असवार ।
 नोपतां बाज रही दिन रातां, सकल की साय करो माता । छन्द ।
 परचो एक साहुकार पायो, मात को देवल चिणवायो ।
 पोल ईक सूरज के सामी, कुँड का अमृत है पानी ।
 अधर खंभ ऐसो बणियों, जाणत सब है जान ।
 कलयुग में छिप जावसी, कोई सत्युग को रैनाण ।
 कलयुग में करत लोग बातां, सकल की साय करो माता । छन्द ।
 परचो ईह पाली नो राणो, उदयपुर मेवाड़ी जाणो ।
 कारज उसका भी सिद्ध कीनो, वचन से पुत्र देय दीनो ।
 सूतां सपनो आइयो, जाग सके तो जाग ।
 देऊँ गढ़ चित्तोड़ कास, थारे मेटौँ दिल का दाग ।
 द्रव्य ईक जूना भी पाता, सकल की सहाय करो माता । छन्द ।
 रात का राणोजी उठ जाग्यो, मात के पांवा उठ लाग्यो ।
 माता को अखी वचन पाऊँ, देश में देवल चिनवाऊँ ।
 जब देवी का हुकुम सूँ आयो देश दिवाण ।
 मंदिर चिणवाया, भूप सूँ ऊँचा किया निर्वाण ।
 कुँड के पेड़ी बंधवाता, सकल की साय करो माता । छन्द ।
 सेवक नित सेवा ही करता, ध्यान श्री दधिमथ का धरता ।
 पाराशर वंश थारी कर आरती नित उठ भोग लगाता ।
 जोगण्या निरत करत भैरूँ डमाक डम बाजत है डमरूँ ।
 मारवाड़ के मायने प्रकट भई है गोठ ।
 आपो आप बिराजे जननी, बाहर निकली जोत ।
 जातरी रात दिन आता, सकल की साय करो माता । छन्द ।
 सम्वत् है उन्नीसो दस में, छन्द गुण गायो रंग रस में ।
 चौथ सुद श्रावण के मासा, सकल की पूरो मन आशा ।
 दसरावो मेलो भरेसजी, चैत्र आसोजां माय ।
 देश देश का आवे जातरी, पूरे मन की आश ।

आकृती भाष्यक

अन्न धन दीजो माता, सकल की साय करो माता । छन्द ।
 माता को नंद छंद गायो, माता के चरणां चित लायो ।
 जो जन गावे अरु सुणे, निश दिन धरे जो ध्यान ।
 गुरु बड़ा गुणवान है मूलचंद महाराज ।
 जोड़कर जेठमल गाता सकल की साय करो माता । छन्द ।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

दुर्गा स्तुति

(तर्ज— करमा बाई को खीचड़लो)

मैया दीजो जी प्रसादी हाथ बढ़ाय बाहर उबा टाबरिया । टेर ।
 मैं तो थारा टाबर टूबर तू छः म्हारी माय ।
 कुल देवी जगदंबा अंबा लुल लुल लागूं पाय ।
 अंबा दीजो जी चरणामृत अमृतधारा । बाहर ।
 चरणामृत चरणोदक दीजो, केशर चन्दन साथ ।
 दूध पतासा मिसरी दीजो, मीठा रहसी हाथ ।
 अंबा दीजो जी मेवारा, भर भर थाल । बाहर ।
 अन्न धन रा भंडार भरी जो, लक्ष्मी दीजो अपार ।
 सभी रकम की वस्तुएँ मैया, घर में दीजो बसाय ।
 अंबा दीजो जी सोनारो, नोसर हार । बाहर ।
 थारा चरणा री भक्ति दीजो, चोखो दीजो ज्ञान ।
 भरी सभा पंचो में मैया, म्हारो राखजो मान ।
 मैया दीजो जी नैना री ज्योति अपार । बाहर ।
 टाबरिया ने गोद झड़लो देव बुलावो आप ।
 अत्रिय दास शरण में थारी, भूल करीजो माफ
 अंबा दीजो जी चरणा भक्ति अपार । बाहर ।

❀ ❀ ❀ ❀ ❀

गण्डारा का गायत्राम अमरीकी हि

मां अंबाजी की आरती

जय अम्बे गौरी, मैया जय श्यामा गौरी ।
 तुमको निशदिन ध्यावत, हरि ब्रह्मा शिवजी ॥

आश्वती ऋषिग्रन्थ

मांग सिंदूर विराजत, टीको मशगमद को ।
 उज्जवल से दोउ नैना, चंद्रवनद नीको ॥२॥ जय अम्बे ।
 कनक समान कलेवर रक्ताम्बर राजै ।
 रक्त—पुष्प गल माला, कण्ठनपर साजै ॥३॥ जय अम्बे ।
 केहरी वानर राजत, खड़ग खपर धारी ।
 सुर नर मुनि जन सेवत, तिनके दुख हारी ॥४॥ जय अंबे ।
 कानन कुण्डल शोभित, नासाग्रे मोती ।
 कोटिक चन्द्र दिवाकर, राजत सम ज्योति ॥५॥ जय अंबे ।
 शुम्भ निशुम्भ विदारे, महिषाषुर धाती ।
 धूम्रविलोचन नैना निशिदिन मदमाती ॥६॥ जय अम्बे ।
 चण्ड मुण्ड संहारे, शोषितबीज हरे ।
 मधु कैटभ दोउ मारे, सुर भयहीन करे ॥७॥ जय अम्बे ।
 ब्रह्माषी, रुद्राषी, तुम कमला रानी ।
 आगम—निगम—बखानी, तुम शिव पटरानी ॥८॥ जय अम्बे ।
 चौसठ योगिन गावत, नृत्य करत भैरूँ ।
 बाजत ताल मृदंगा औ बाजत डमरू ॥९॥ जय अम्बे ।
 तुम ही जगकी माता, तुम ही हो भरता ।
 भक्तन की दुख हरता सुख सम्पति करता ॥१०॥ जय अम्बे ।
 भुजा चार अति शोभित, वर मुद्रा धारी ।
 मनवाञ्छित फल पावत, सेवत नर—नारी ॥११॥ जय अम्बे ।
 कंचन थाल विराजत अमर कपुर बाती ।
 (श्री) माल केतु में राजत कोटिरतन ज्योति ॥१२॥ जय अम्बे ।
 (श्री) अम्बेजी की आरति जो कोई नर गावै ।
 ज्यारां पाप परा जावे, ज्यारे घर लक्ष्मी आवे, ज्यारे नव निध होय जावे ।
 कहत शिवानंद स्वामी, सुख सम्पति पावै ॥१३॥ जय अम्बे ।

श्री दधिमथी माताजी की पोढ़णा

पोढ़ो पोढ़ो दधिमथी माई, अखियों में नींद छाई ।
 कंचन मणि का पलंग सजत है, रेशम बाण बनाई ।
 जिस पर गलीचा, सिरख परथना पुष्पन सेज बिछाई ।
 अब पोढ़न का वक्त हुआ है, मुख उबासी आई ।

दूध पान कर शयन कीजिये, आद्य शक्ति महामाई।
 आदि अनादि तू ही जग जननी, गति तेरी लखियन जाई।
 यटा पुष्पनकी सेज बछत, दूनपान जिसमें अत्रदान छिड़वाई।
 कहे गणेश कर जोड़ भगवती, हित चित में यश गाई।
 पोढ़ो पोढ़ो दधिमथी माई, अंखियों में नींद आई।

ऋ ॠ ॠ ॠ ॠ ॠ

आरती ज्वाला कालीदेवी की

मंगल की सेवा सुन मेरी देवा हाथ जोड़ तेरे द्वार खड़े।
 पान सुपारी धजा नारियल ले ज्वाला तेरी भेंट खड़े। टेर।
 सुन जगदंबा न कर विलंबा संतन के भंडार भरे।
 सन्तन प्रति पाली सदा खुशहाली जय काली कल्याण करे।
 बुद्ध विधाता तू जग माता, मेरा कारज सिद्ध करे।
 चरण कमल का लिया आसरा, शरण तुम्हारी आन परे।
 जब जब भीड़ भक्तन पर तब तब आय सहाय करे। संतन।
 बार बार ते सब जग मोहा, तरुणी रूप अनूप धरे।
 माता होकर पुत्र खिलावे, भार्या होकर भोग करे।
 संतन सुख दाई सदा सहाई सन्त खड़े जयकार करे। संतन।
 ब्रह्मा विष्णु महेश सहस्र फल लिये भेंट तेरे द्वार खड़े।
 अटल सिंहासन बैठी माता सिर सोने का छत्र फिरे। संतन।
 बार शनिश्चर कुम्कुम वरणी जब लंकड़ को हुक्म करे।
 खड़ग खप्पर त्रिशूल हाथ लिए रक्त बीज को भस्म करें।
 शुभ्म निश्चम्भ पछाड़ी माता महिषासुर को पकड़ दले। संतन।
 आदित अबतर आप को वीरा, अपने जन को कष्ट करे।
 कुपित होयकर दानव मारे, चंड मुंड सब चूर करें।
 जब तुम देखो दया रूप होय पल में संकट दूर टरें। संतन।
 सोम्य स्वभाव धरियों मेरी माता जन की अरज कबूल करे।
 सिंह पीठ पर चढ़ो भवानी तीन भवन का राज करे।
 दर्शन पावे मंगल गावें सिद्ध साधक वर तेरी भेंट धरे। संतन।
 ब्रह्मा वेद पढ़े तेरे द्वारे शिव शंकर हरि ध्यान धरे।
 इन्द्र कृष्ण तेरी आरती करे, चंवर कुबेर ढुलाय रहे।

आश्ती संग्रह

जय जननी जस मात भवानी अटल में राज्य करे। सन्तन।

बटुक भैरव की आरती

ओ३म् जय भैरव देवा, प्रभु जय भैरव देवा,
जय काल अरु गोरा, कृत देवी सेवा। ओ३म्।
तुम्हीं आय सुधारक, दुःख सिन्धुतारक,
भक्तों के भय हारक, भीषण वपु धारक। ओ३म्।
वाहन श्वान विराजत, की त्रिशूल धारी,
महिमा अमित तुम्हारी, जय जय दुख हारी। ओ३म्।
तब बिन देवी पूजा, सफल नहीं होवे,
चतुर्वर्तिका दायक, दर्शन दुःख खोये। ओ३म्।
तैल तटक दधि मिश्रित, भाव बली तेरी।
कृपा करो जय भैरव, करिये नहीं देरी। ओ३म्।
पांव घूंघरे बाजत डमरु, डमकावत।
बटुक नाथ वन बालक जन मन हरषावत। ओ३म्।
बटुक नाथ की आरती जो कोई गावे।
कह धरणीधर वर नर वांछित फल पावे। ओ३म्।

मां दधिमथी का भजन

झालर शंख नगारा बाजे रे,
मांगलोद के कांकड़ में जगदम्बे विराजे रे।
सूरज सामी दोय पोल भैरुजी का स्थान,
दूजी पोल में गजानन्द बाबो, अंजनी का हनुमान,
दरशन से दुखड़ा भाजे रे। 1।
मंदिर मूंडा के बावड़ी ज्याँ को निरमल नीर,

आश्चर्यी स्थान

राणाजी ने परच्यो दीनो, कंचन हुआ शरीर,
मंड में नोपत बाजे रे। 2।

सुन्दर शिखर बण्यो है भारी अधर खंभ है एक,
ब्रह्मा, विष्णु मोहित होगा देख मंदिर की टेक,
निज मंदिर की शोभा छाजे रे। 3।

पंडितजी तो यज्ञ करावे, सेवक साजे सेवा,
कोई चढ़ावे लाडू चुरमा कोई चढ़ावे मेवा,
शक्ति के भोग लगावे रे। 4।

चैत्र सुदी आठम के दिन माताजी को मेलो,
दूर देश का आवे यात्री होय दायमों भेलो,
भीड़ भड़का माचे रे। 5।

यज्ञ कुण्ड की महिमा कहूं काई ज्यांको नीरमल नीर,
चैत्र सुदी नवमी को मेलो गंगाजी की सीर,
पेढ़यां ऊपर नावे ज्यांकी पीड़ा भागे रे। 6।

आज भवानी दरशन दिना मज मंदिर के बीच,
माताजी की महिमा गावे पूनमचंद दाधिच,
पगा में बांध गूंगरा नाचे रे। 7।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

अथ दधित्या वृक्ष प्रारंभ

शुभ गोठ मांगलोद पुरी मरु देश के मांय निवास करे,
बने मांय बसे बहु खेजदिया नी खोदत खड़प कई गाड़ा भरे,
बहु दूर सूं देवल्यो चमके शिखरा पर सोने का कलश धरे।
कह रामप्रताप भजो दुनियां दधिमय रानी कारज सिध करें।
भूमि काट के छाट लियां प्रगटी बहु तेज के नूत्र विशाल धरे,
मुख तेज मनोहर पुष्ट लगे गल से आधा भाग भूमि विचरे,
ये पाताल के दैत्यर दानव को जगदंबा पगों से सदाय चर। कह।

नथ केशर के नग बोत जड़े साड़ी बीच रतन सदा ही धरे,
गल माय विशाल धरयो तमन्यो फिर कंठी जड़ाऊँ श्रृंगार करे,

आरती संग्रह

जारि घाघरो रेशम को विमके लयी घोखरू औरणी धोरा धरे। कह।
 दोय सिंह से बैठा के रखा दिन रात हमेश्यां जोत जरें,
 छत्र छोटा छड़ी नित चंवर ढूले जहां पंडा विधान सु पूजा करें,
 बहु शोभित अंब को मंडप है जहां शोडष स्तंभ विशाल धरे। कह।
 दरवाजा कपाट का ठाठ बड़ा परकोटा से बुर्ज विशाल धरे,
 जहां च्यारू ही चौक जड़े फिर च्यार दिशा में चोकाड़ा सरे,
 लघु मंडप में दोहि कुँड विषे द्विज वेद विधान सूं होम करे। कह।
 बुर्जों पे छत्रि झरोखा जुके फिर चान्दनिया अति लंबी शरे,
 चड़ लोक हजारो बिलोकत है जहां कोटरिया में निवास करे,
 जिन मेलों में लाखों रा माल बिके अरु लाखों ही लोग जहां बिचरे। कह।
 जल ठाट जहां जगदंबा कृपा कोई बाग बगीचों में पुष्प सरें,
 जहां कूप में प्याऊ भरौज वरी नर टंकी के टूटीयां से पानी भरे,
 फिर कुँड ये जुँड मनुष्यन कर नर नारी हजारों ही स्नान करें। कह।
 ऋषि विष्णु ही दास दाधीच भए महाराना कुंजा उपदेश करे,
 रूपयए लाखों लगा कमठांण रच्या वन मांय किला महलात धरे,
 करो आय मुनि महाराज निगा यहां चांदी किवाड़ इनोने करे। कह।
 एक बारया धार के दीश भुजा कर खड़ग खपर आप धरे,
 खल संग चौसठ योगिनी खड़े दुर्ग नव कोटि जहां विचरे। कह।
 खल शुभ निशुभ्य कुमार हटा असमान को शोभित पान करे,
 एक बार भई भुवि झरति प्रभु आप अंबजी कु आज्ञा करें,
 ब्रजजा जगदंब सु कार्य करो खल ब्रज माय हरी अवतंश धरे। कह।
 अगणि से सन्यासी कि साल विषे सुद सप्तमी चेत्र की अर्ज करे,
 त्रिहिपाठी आसोपा या गंगापुर का सुत केवलराम ये उचरे,
 सब शत्रु हटाकर वंश बड़ा कुल देवजी द्रव्य भंडार भरे। कह।
 कह रामप्रताप भजो दुनिया दधिमथनी कारज सिद्ध करे। कह।



मां दधिमथी की आरती

श्री कोटी चन्द्र भालिनी कपाल भाल धारणी,

आकृती स्थगठ

कपूर गौर रूपणी अपार पाप त्यारणी ।
 अनाद्य रूप ईश्वरी, मुरज्य ब्रह्मा दायनी,
 विरंच विष्णु ईश्वरी, कला कलाप शंकरी ।
 आनंद कोटि कालिका, कलाय नंदी मालिका,
 तू ही सुबुद्धि बर्द्धनि, तू ही कुबुद्धि खंडनी ।
 सुबुद्धि सिद्धि दायनी, नमामि सिंह वाहिनी ।
 श्री विष्णु दास चरण शरण राखो हंस बाहिनी ।



क्षमा प्रार्थना

मंत्रहीन किया हीनं भक्तिहीनं जनार्दन,
 यत्पुजितो मयादेवी परिपूर्ण तदस्तुमे ।
 यदक्षर पद भृष्टं मात्राहीनं च यद् भवेत्,
 तत्सर्वम् धम्यतां देवी प्रसीद परमेश्वरी ।
 सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः ॥

गोठ मांगलोद वाली दधिमथी माताजी की आरती
 जय गोठ नगर वाली, मैया जय गोठवाली ।
 दास जनों के संकट दूर करन वाली । जय गोठ ।
 जय अंबे जय दधिमथी, जय जय महतारी ।
 दोऊ कर जोड़याँ बिनहुं अर्ज सुनो म्हारो । जय गोठ ।
 तू ही कमला तू ही लक्ष्मी, तू ही दधिमथी थल में ।
 सुमरत हाजिर होबो कष्ट हरो पल में । जय गोठ ।
 ध्यान धरणों राणा ने, परचो भल पायो ।
 महर भई मां थारी मंदिर चिणवायों । जय गोठ ।
 कुँड भरयो सागर सो, अटल जोती अंबा ।
 धजा फरुके नभ में, बिच अधर थम्भा । जय गोठ ।
 चैत्र आसोज नवरता, मेला हो भारी ।
 आवे अधिक दायमो, जाति नर नारी । जय गोठ ।
 हाथ जोड़ के हरदम, निशि वासर ध्यावें ।

आरती भंग्रह

छगनलाल बल दबा, सुख सम्पत्ति चावै। जय गोठ।

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

श्री दुर्गा स्तुति

सुन मेरी देवी पर्वत बासिनी तेरा पार न पाया। टेर।
पान सुपारी धजा नारियल ले तेरी भेंट चढ़ाया। सुन।
सुखा चोली तेरे अंग बिराजे केशर तिलक लगाया। सुन।
नंगे पग तेरे अकबर आया सोने का छत्र चढ़ाया। सुन।
ऊँचे ऊँचे पयज बन्धों दिवला निच शहर बसाया। सुन।
सतयुग द्वापर त्रैता मध्ये कलियुग राज सवाया। सुन।
धूप दीप नैवैध आरती मोहन भोग लगाया। सुन।
धानू भगत मैया तेरे गुण गावे मन वांछित फल पावे। सुन।

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

माताजी की कीर्ति

गवरी का पुत्र गणपत महाराजा, राखी सभा में म्हारी थे लाजा।
सारा तो पहली थाने मैं ध्याऊँ, माता दधिमथी की कीर्ति मैं गाऊँ।
आद तो शक्ति विष्णु मम्बाई, ऋषि अर्थवा के पुत्री हो आई।
दाधीच कुल की मोटी मम्बाई, बेन दधिमत दाधीच भाई।
वंश बडावण अवतार आई, माता शक्ति ने गोद खिलाई।
सतयुग त्रैता द्वापुर आगे से आई, आदि अनादि वेद को भाके।
देश मरुधर में नगर नागौर, तासू पूर्व कोस बारह अगुनो।
गोठ मांगलोद बीच प्रगटी मम्बाई, करते भक्तां की सदा ही सहाई।
प्रथम परचो चौहान दीनो, सारो समुद्र जन चांदी को कीनो।
मानो कुण खावन देशी मम्बाई, खान खड़ी की करी जद साई।
दान इन्द्र ने दाधीच दीनो, शरीर अपनो परमारथ कीनो।
सती ज्ञाना ने बात बिचारी, पति करी छ सुरपुर की प्यारी।

आकृती स्थंग्रह

पति विहुनी नारी दुःख पावे, सती हो जाऊँ म्हारे मन भावे।
 पेट पर नाल पीपलाद काडो, सती चित्ता में अखाडो माडो।
 पड़ियो पीपलाद पीपल के मांही, पालन करने लक्ष्मीजी आई।
 उठाय गोद में अभूत दीनो, शिशु पीपलाद माता कह दीनों।
 माता तब प्रकट होने को धारी, पृथ्वी फाटी न छाई धुंधकारी।
 शिखर समेत बायर तब आई, धेनु भीड़ कर दूर गई भाई।
 ग्वालो करियो हो हो तब माई, तब ही तो देवी बाहर नहीं आई।
 गुप्त एक मस्तक पुजवाई, शिखर गुफा में सज्जन एक रहता।
 माता का दर्शन करता सुख लेता, एक दिन कुमति मन मांही छाई।
 बैल चोरी कर लाओ एक भाई, पीछे से बार दौड़ी भी आई।
 जाय गुफा में लुकियो वो भाई, बेग करनी माता अब आई।
 बैल की गाय माता जब कोनी, भवित सज्जन की सकल में चीनी।
 चोर चकारा जब ही कुआद, दर्शन करने दुनिया सुख पावे।
 यज्ञ कुंड पिछे कुआबं, जिन माही दुनिया सारी जो नावे।
 बुध अष्टमी को जो कोई नावे, पाप जावे पुन्य कमावे।
 धारा पुष्कर की जिन दीन आवे, कपाल पीठ वेदों में गाई।
 राजा मानदाता यज्ञ ओ कीनो, दान श्रीरान गुप्त दीनों।
 सनमुख सूरज बावड़ी भारी, अमृत नीर पीये नर नारी।
 सातम की रात जगाया थारी, अष्टम को भोग धरे नर नारी।
 काई मेला की करु बड़ाई, इतनी तो बुद्धी नहीं छ माई।
 गांव दुगस्ताऊ वाला है तिलोक भाई, दर्शन को आवे नर और नारी।



पुष्पांजली

ओ३म् यज्ञेन यज्ञमयजन्य देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन,
 तेहनाकं महिमान सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः।
 ओ३म् राजरथिराजाय प्रसह्य साहिने,
 नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे।
 स में कामान् काम कामाय मह्यम,

आश्वती चतुर्थ

कामेश्वरो वैश्रवणो दधातु ।
 कुबेराय वैश्रवणाय महाराजय नमः ।
 ओऽम् स्वस्ति साप्राज्यं भोज्यं स्वराज्ये वेराज्ययं राज्यं,
 महाराज्यमाधि पत्ययं समन्तपर्यायीस्यात् सार्वभोमः सार्वायुषं
 अन्तादा परार्धातपूथि के समुद्रं पर्यान्ताया एकरादितो ।
 तदप्येख श्लोको अभिगीतों सकलः परिवंष्टारो मरुत्तस्यावन ग्रही
 आविक्षितस्य काम प्रष्णिश्वे देवा सभासदः ॥
 पुष्पांजलि समर्पयामी ।
 कायेन बाचा मनसेन्द्रियैर्वा तुद्ध्यात्मनायानुस्त स्वभावात् ।
 करोमियद्यत् सकलन परस्मै नारायणयेति समर्पयेतत् ।

॥ ॥ ॥ ॥ ॥

भगवती जगत् जननी दधिमथी की अवतरण कथा

सम्पूर्ण विश्व में अद्वितीय विश्वगुरुता प्राप्त करने का सौभाग्य केवल भारत भूमि को ही प्राप्त हुआ है। भारत भूमि देवताओं व मुनियों के प्रादुर्भाव से उर्वरा हुई, उनकी कृपा दुष्टि रूपी सुधा प्रवाह से सिक्त होकर अपने सभ्य एवं संस्कृति के विकसित कुसुमों के सौरभ से सभी के हृदय को चुराती है। देवों द्वारा भी स्तुति करने योग्य इस पुण्य भूमि पर महर्षि दधिची की पावन भागिनी महामाया भगवती दधिमथी भारत वर्ष के विभिन्न प्रान्तों में बसे लाखों दाधीच (दाहिमा) ब्राह्मणों की कुल देवी है। दाधीच ब्राह्मणों का कोई भी धार्मिक संस्कार बिना भगवती दधिमथी की पूजा अर्चना के पूर्ण नहीं हो सकता। महामाया भगवती दधिमथी की पुण्य भूमि राजस्थान राज्यान्तर्गत नागौर मण्डल मारवाड़ प्रदेश (गोठ मांगलोद ग्राम) में दाधीच कुल देवी सर्वत्र अपनी अनुपम सुषमा बिखेर रही है एवं कुल देवी मंदिर दाधीच समाज का श्रद्धा केन्द्र है। अपनी मनौतियों, बच्चों का मुण्डन संस्कार, जात, जखूला हेतु दोनों नवरात्रियों सहित वर्ष भर श्रद्धालु यहां आते रहते हैं। मैया दधिमथी जिन श्रद्धालुओं की मनोकामना पूर्ण करती है वे मंदिर में थालियां (भोग) चढ़ाते हैं। यह मंदिर केवल समाज का केन्द्र बिन्दु ही नहीं अपितु अन्य

समाज को भी अपनी मनौतियां मांगते नजर आते हैं और मैया उन मनौतियों को पूर्ण भी करती है।

शेषनाग पर शयन करने वाले भगवान विष्णु के नाभिकमल से ब्रह्माजी उत्पन्न हुए। और उनके तपोबल से दस मानस पुत्र उत्पन्न हुए। उन दस पुत्रों में महर्षि अर्थर्वा ऋषि भी थे जो अर्थवेद के प्रणेता माने जाते हैं। उन्होंने जल में बिना किसी अरणी मंथन के अग्नि का प्रादुर्भाव कर वैज्ञानिक ढंग से प्राणभूत ऊर्जा (हाइड्रोपावर) का आविष्कार किया। यह मानव विकास के इतिहास में उनका प्रथम वैज्ञानिक योगदान था। परम तेजस्वी अर्थर्वा ऋषि का विवाह कदर्म मुनि की पुत्री शान्ता से हुआ। महर्षि अर्थर्वा की धर्मपरायणा पत्नी शांता ने भगवती लक्ष्मी की तपस्या की। योगमाया ने प्रसन्न होकर घर पर ही अवतरित होने की घोषणा की। और अवतरित होने का प्रयोजन इस प्रकार बताया— भगवती लक्ष्मी ने वरदान देते हुए कहा कि दैत्यराज विकटासुर का वध करने हेतु मैं तुम्हारे यहां पुत्री के रूप में जन्म लूँगी और देवताओं को अभय प्रदान करूँगी। महर्षि और शान्ता ऐसा वरदान पाकर बड़े प्रसन्न हुए। शांता देवी का गर्भ धारण। दशम मास में देवी स्वरूपा जगज्जननी नारायणी का जन्म हुआ। जन्म के समय अर्थर्वा ऋषि ने नारायणी नाम रखा और बाद में भगवती दधिमथी नाम पड़ा।

नवरात्रा का महत्व- कहा जाता है कि अर्थर्वा ऋषि के कोई सन्तान नहीं हुई। नवरात्रा में दोनों में संयम और नियम से परब्रह्मा स्वरूपिणी आद्यशक्ति दुर्गा की उपासना की। उपासना से दुर्गा प्रसन्न होकर उनकी वांछानुसार स्वयं उनके घर पुत्री के रूप में माधसुदी 7 गुरुवार को अवतीर्ण हुई। अर्थर्वा ऋषि ने पुत्री का नाम नारायणी रखा। और उन्हीं के घर भगवती की कृपा से भाद्रपद सुदी 8 को महर्षि दृष्टि आची का जन्म हुआ। दाधीच मधुविधा और ब्रह्मविधा के प्रकाण्ड विद्वान थे।

दैत्यराज विकटासुर कथा:- सृष्टि के प्रारंभ में ही सुर और असुर शक्तियों का अस्तित्व रहा है। कहा जाता है कि सृष्टि स्वयं बन्दी बनाई गई शक्तियों को स्वयं प्राप्त करती है और उन शक्तियों को अवतार के माध्यम से लेती है। श्री लंका के राक्षसराज

आश्तीक्षण्ड

रावण को मारने के लिए भगवान विष्णु राम के रूप में अवतरित हुए। मामा कंस को मारने के लिए भानजे श्री कृष्ण अवतरित हुए। शेषनाग अपने अपमान का बदला रावणात्मज मेघनाद से लेने के लिए दशरथ पुत्र लक्ष्मण के रूप में अवतरित हुआ। इसी प्रकार जब आसुरी शक्तियों नभोमंडल और पृथ्वीमंडल पर अपना रूप दिखाती है तब तब देव शक्तियों को अवतरित होना पड़ता है। इसी प्रयोजन से महामाया दुर्गा रूप नारायणी का जन्म भी निष्कल नहीं हुआ है।

उस समय आसुरी शक्ति के प्रतिनिधि दैत्यराज विकटासुर ने कठोर तपस्या करके ब्रह्माजी से अमरता का वरदान मांगा। किन्तु मृत्यु तो अवश्यम्भावी है। मृत्यु से कोई नहीं बच सकता। अतः स्त्री को छोड़कर अजेयता का वरदान ब्रह्माजी ने दे दिया। वरदान पाकर दैत्यराज का आसुरी बल और अधिक बढ़ गया। उसने तीनों लोकों (स्वर्गलोक, पृथ्वीलोक, पाताल लोक,) दसों दिशाओं के दिक्पालों और सूर्य, चन्द्रमा, अग्नि, वायु को अपने बस में कर लिया। स्वर्गलोक को जीतकर देवताओं को राजश्री हीन कर दिया। आसुरी व मायावी शक्ति के माध्यम से स्वयं ब्रह्माजी की ब्रह्मशक्ति भी छीन ली, जिससे सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया अवरुद्ध हो गई। वह दुष्ट दानव अपने को अजेय समझने के कारण मैया की तपस्या में लीन ब्राह्मणों की हत्या करने लगा एवं तपस्या में अवरोध उत्पन्न करने लगा। उसे अपनी शक्ति पर इतना घमंड था कि शिव और विष्णु के मंदिरों को नष्ट करने लगा। इस प्रकार दैत्यराज विकटासुर के इशारे पर घृणित एवं कुत्सित कार्य एवं ब्राह्मणों का ब्राह्मणत्व छीन लिया। इससे सभी देवी देवता घोर संकट में पड़ गए। महाबली विकटासुर के आगमन से गुरु वृहस्पति ने देवताओं को परामर्श दिया कि इस समय यत्नपूर्वक प्राणों की रक्षा करने में ही कल्याण है। गुरु के वचनों को सुनकर देवतागण सपरिवार हिमालय की ओर प्रस्थान कर गये। देवताओं के पब्लायन के समाचार को सुन कर दानवों के हौसले और भी बुलंद हो गए। यहां पर भी देवताओं पर अत्याचार होने लगा। चारों और त्राहि त्राहि मच गई। देवताओं को अपनी देवत्व शक्ति से विश्वास डगमगाने लगा। दैत्यराज विकटासुर के अत्याचारों से त्रस्त सभी देवगण भगवान विष्णु की शरण में गए।

भगवान विष्णु ने देवताओं को आशावस्त करते हुए बताया कि विकटासुर का वध कर संसार में पुनः देव संस्कृति स्थापित करने एवं समस्त प्राणियों को अभय प्रदान करने के लिए योगमाया महालक्ष्मी भगवती नारायणी के रूप में महर्षि अथर्वा के घर में प्रकट हुई है। वही इस दैत्यराज का नाश करेगी। आप वहीं जावें। क्योंकि विकटासुर अपने अभिमान के वंशीभूत होकर ब्रह्माजी से केवल पुरुष से ही अभय मांगा था उसने कहा था कि मुझे स्त्रियों से कोई भय नहीं है तभी ब्रह्माजी ने तथास्तु कहें दिया।

भगवान विष्णु की बात सुनकर देवता लोग तत्काल की अथर्वा ऋषि के आश्रम पर पहुंचे। उन्होंने देखा कि अथर्वा ऋषि को आत्मजा महामाया माँ दधिमथी नारायणी पदमासन पर प्रसन्न मुद्रा में विराजमान थी तब देवताओं ने बहुविध श्रद्धा एवं सम्मान सहित माँ की पूजा और अर्चना की। और अपने आने का प्रयोजन बताया। देवताओं के आर्तनाद को सुनकर माँ का हृदय द्रविभूत हो गया और विनीत स्वर में विकटासुर को मारने का आग्रह किया। और बोली कि अब डरने की बात नहीं है। मैं तुम्हारे शत्रु विकटासुर को मारकर तुम लोगों को निष्कंटक राज्य दूंगी।

देवताओं के प्रस्थान कर जाने के बाद में दधिमथी ने अमेद्य कवच सहित अस्त्र शस्त्र धारण किया और सिंह पर चढ़कर दैत्यराज विकटासुर का काम तमाम करने के उद्देश्य से राजहंस के समान श्वेत, शत्रुओं में भय उत्पन्न करने वाले शंख को देवी ने अपने मुखारविंद से बताया जो उस समय तीनों लोकों में महा कोलाहल मच गया। उसी समय देवी के वाहन शेर (सिंह) के मेघघटा गर्जना की। तो घोर गर्जना ने राक्षसों के प्राणों को कम्पायमान कर दिया। और भयभीत होकर रक्षा करो बचाओ आदि के स्वरों में विलाप करते हुए राक्षस गण अपने प्राण बचाने के लिए इधर उधर भागने लगे। तब विकटासुर ने अत्यन्त कोई मौसूल नहीं लिया। आकर अपना त्रिशूल उठाकर माँ को ललकारा। दैत्यराज विकटासुर अपनी सेना सहित हाथी पर लगे होडे पर सवार होकर युद्ध भूमि में उपस्थित हुआ। वह अत्यन्त घोर गर्जना के साथ युद्ध करने के लिए आगे बढ़ ही रहा था कि उसे अनेक अपशकुन एक साथ देखनें को मिले

आकृती संग्रह

और अपना वरदान याद आया कि वह स्त्री जाति से ही मारा जा सकता है। तभी दधि समुद्र में छिप गया। स्वयं अर्थवर्णनिंदिनी ने सभी दिव्यास्त्रों सहित सिंह पर आरूढ़ होकर सप्त सिंधुओं का मंथन किया। इस प्रकार दधि समुद्र में छिपे विकटासुर पर अत्यन्त कोध के साथ अपना त्रिशूल फेंका जिससे राक्षस राज का शरीर धूम को गया, आंखे फट गई, जंघाएं खंड खंड होकर जा गिरी। तथा आंतडिया बाहर निकल गई।

इस प्रकार दधिसागर में विकटासुर का वध कर त्रिजयोपरान्त समुद्र से उठती हुई माँ का मुख इस प्रकार सुशोभित हुआ जैसे पूर्णमासी का चांद हो। माँ ने दधि समुद्र का मंथन कर माघ शुक्ला अष्टमी को संध्या काल में विकटासुर का वध किया। यह तिथि जन्माष्टमी के नाम से विख्यात है। दैत्यराज विकटासुर का वध से देवताओं में हर्ष व्याप्त हुआ। देवताओं की खोई हुई शक्ति पुनः प्राप्त हुई। ब्रह्माजी का सृष्टि सृजन का कार्य पुनः सामान्य हुआ।

इस प्रकार.....

दधिमथी मैया का नामकरणः ब्रह्माजी ने दधि समुद्र का मंथन कर विकटासुर का वध करने वाली अर्थवर्णनिंदिनी का नाम दधिमथी रखा। और महर्षि अर्थर्वा को पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया तथा भगवती दधिमथी अपने भाई के वंश की रक्षा करती हुई उनकी कुलदेवी होगी, यह आशीर्वाद भी दिया।



परोपरकार पुण्याय पापाय परपीडनम् ऋषि दधिची का अवतार

दैत्यराज विकटासुर का वध करने पर ब्रह्माजी ने वरदान और आशीर्वाद दिये निम्नानुसार थे:- 1. दधि समुद्र का मंथन करने वाली नारायणी का नाम दधिमथी पड़ा। 2. ऋषि अर्थर्वा को पुत्र प्राप्ति और दधिमथी अपने भाई के वंश की रक्षा करते हुए उनकी कुल देवी होगी।

इस प्रकार भगवती दधिमथी का भाई व अर्थर्वा ऋषि का पुत्र दधिची ऋषि उत्पन्न हुए। जो कालान्तर में अर्थर्वा पुत्र महर्षि दधिची

द्वारा विश्व कल्याण एवं देश धर्म की रक्षा के लिए दैत्यराज वृत्तासुर के वध के लिए अपनी अस्थियों को देवताओं को प्रदान किया था। इसी अपूर्व त्याग को याद कर इससे शिक्षा ग्रहण करने के लिए भारत वर्ष में ही नहीं प्रवासी भारतीयों द्वारा भी विश्व के अनेक देशों में महर्षि दधिची जयन्ती मनाई जाती है। जो अधिकतर प्रतिवर्ष अगस्त माह के अंतिम सप्ताह में आती है। इसी दिन महर्षि दधिची की पावन मूर्ति को जल से पावन किया जाता है। और नानाप्रकार के देवताओं की सवारियां (शोभायात्रा) निकाली जाती है। और सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया जाता है। एवं बुद्धिमान छात्रों को पारितोषिक पुरुस्कार प्रदान किया जाता है। और शपथ दिलाई जाती है कि संपूर्ण दाधीच समाज को अपने त्यागमय पिता दधीचि के कार्यों का अनुकरण करे। समाज को सुखी बनाये।

ऋषि अस्थिदान और दैत्यराज वृत्तासुर वध कथा:- सृष्टि क्रम के प्रारंभ में देवताओं का राज्य था पर दानवों की शक्ति बढ़ती गई और ब्रह्मा, विष्णु, महेश इन तीनों देव प्रमुखों का विश्वास व भक्ति से वरदान व आशीर्वाद प्राप्त करते रहे।

जिस प्रकार दधिमथी माता ने विकटासुर का वध किया उसी प्रकार महर्षि दधीचि की अस्थियों से बज बनाकर वृत्तासुर का वध किया गया। दैत्यराज वृत्तासुर ने तपस्या बल से वरदान प्राप्त किया और स्वर्गलोक, पाताल लोक, पृथ्वीलोक पर विचरण करने वाले जीवों को सताने लगा। स्वयं स्वर्ग लोक राजा इन्द्र को भी सता च्युत कर दिया। देवताओं का राजा इन्द्र भी देवताओं सहित अपने प्राणों के भय से इधर उधर छिपता फिर रहा था। उस समय विष्णु ने देवताओं को सलाह दी कि पृथ्वी लोक पर एक ऐसा ऋषि है जिनकी हड्डियां इतनी मजबूत हैं कि उनके बने आंसुओं से ही राक्षस राज एवं संपूर्ण राक्षसों का वध एवं संभव है अन्यथा नहीं। इधर महर्षि दधिची ने भगवान शिव से वरदान प्राप्त कर रखा था कि वे किसी से मरे नहीं तथा उनके यहां से कोई निराश नहीं लोटते। समय बड़ा बलवान है। महर्षि दधिची का विश्व इतिहास में नाम अमर होना था इसी हेतु देवतागण स्वयं इन्द्रराज सहित भिखारी की तरह कुलपिता दधिची से अस्थिदान की मांग कर रहा है।

आरती संग्रह

अपने वचनों की रक्षा करने हेतु ऋषि ने स्वयं ही मृत्यु का वरण किया और त्यागमय भावना को विश्व इतिहास में छोड़ गए। यह त्याग मात्र के लिए ही नहीं वरन् समस्त मानव जाति के लिए था। एक अपूर्व त्याग। देवताओं की गाय कहलाने वाली स्वयं कामधेनु ने ऋषि के हाड़ मांस को साफ किया। जिससे देवतागण बची हुई हड्डियों से आयुध बनाकर दैत्यराज वृत्रासुर को मार गिराया एवं संपूर्ण पृथ्वी को राक्षसों से मुक्त करके पुनः इन्द्रराज एवं देव संस्कृति की स्थापना हुई। परन्तु महर्षि ने अपना जीवन त्याग किया उस समय उनकी धर्म परायण पत्नी वेदवती गर्भवती थी। उस समय पुरानी मर्यादा के अनुसार धर्मपरायण पत्नी पति के पीछे सती हो जाती थी। सती होने की इच्छा वेदवती ने जटाई पर देवताओं ने इस इच्छा का विरोध किया और कहा कि गर्भवती का सती होना पाप माना जाता है। तो वेदवती ने अपना अपूर्ण गर्भ पेट चीरकर निकाल दिया और वे स्वयं ऋषि की मिट्टी के साथ सती हो गई। और अपूर्ण बालक को अश्वस्थ (पीपल के पेड़) को सौंपते हुए बालक की रक्षा करने की प्रार्थना की। ऋषि पत्नी ने महामाया दधिमथी से भी प्रार्थना करते हुए कहा कि आप इस दाधीच कुल की रक्षा करे। आप ही कुल देवी हैं। कुलदेवी दधिमथी के सान्निध्य में पीपल वृक्ष के नीचे पलने के कारण महर्षि दधिची के इस पुत्र का नाम पिप्लाद पड़ा। ब्राह्मणों में से एक जाति दाधीच उसी पिप्लाद ऋषि की संताने हैं। तथा पिप्लाद की रक्षा करने वाली उस दुर्गा को आज भी कुल देवी के रूप में पूजते हैं और मानते हैं। पिप्लाद ऋषि की संताने (संपूर्ण दाधीच समाज) का उद्भवः—

पिप्लाद एक तपोनिष्ठ महर्षि हुए। आपका विवाह चकवर्ती राजा अनरन्य की पुत्री पदमा से हुआ। उनके 12 तेजस्वी पुत्र हुए। और ये 12 पुत्र अपनी प्रतिभाओं का परिचय 10 दिशाओं में जाना जाता था।

12 पुत्र निम्न हैं— 1. बृहदवत्स 2. गौतम 3. भार्गव 4. भारद्वाज 5. कोच्छस 6. कश्म 7. शाष्ठिल्य 8. अत्रि 9. पाराशर 10. कपिल 11. गर्ग 12. लघुवत्स। ये सभी बड़े विद्वान और तपस्ची हुए।

बहुतवत्स एवं गौतम का विवाह अंगिरा ऋषि की कन्याओं के साथ हुआ। बाकी 10 ऋषियों का विवाह देवशर्मा की कन्याओं से हुआ।

और इस प्रकार 12 ऋषियों के 12-12 यानी 144 पुत्र हुए। ये बड़े ही तपस्वी एवं विद्वान् थे। कुलदेवी भगवती दधिमथी की आराधना से इनका प्रभाव बढ़ता ही गया।



श्री दधिमथीजी की आरती गोठ मांगलोद

जय दधिमथी माता, मैया जय दधिमथी माता।
 सुख करणी दुःख हरणी, ईश्वर अन्नदाता ॥ ओ३म् जय ॥
 आदि शक्ति महाराणी, त्रिभुवन जग मता ऐ मैया।
 प्रकट पाल जय करणी, सुर नर मुनि ध्याता ॥ ओ३म् जय ॥
 विष्णु पति तिहारो, शांति है माता ऐ मैया।
 पिता अर्थर्व महर्षि, दधीचि मुनि भ्राता ॥ ओ३म् जय ॥
 सार चुरा विकटासुर, दधि बीच ले जाता ऐ मैया।
 दधिमथी विकट विडारयो, करी जग सुख साता ॥ ओ३म् जय ॥
 प्रकट भई भू लोक में, मांगलोद माता ऐ मैया।
 अटल ज्योति जगती है, दर्शन मन भाता ॥ ओ३म् जय ॥
 शीश छत्र सुवर्ण को विराजे, वसन सुरख राता ऐ मैया।
 रूप अनूप देख कर, रति पती संकुचाता ॥ ओ३म् जय ॥
 देश देश के यात्री दर्श, करन आता ऐ मैया।
 देख छवि माता की, चित्त सुख हो जाता ॥ ओ३म् जय ॥
 हुए निरंजन विधि से, वेद स्तुति गाता ऐ मैया।
 चूरमा भोग लगाता, आचमन करवाता ॥ ओ३म् जय ॥
 चैत्र आसोज में मेला भरता, यात्री बहुत आता ऐ मैया।
 महिमा वरणी न जावे, पार नहीं पाता ॥ ओ३म् जय ॥
 श्री दधिमथी जी की आरती, जो कोई नर गाता ऐ मैया।
 कहे नंद कर जोड़े, भक्ति मुक्ति पाता ॥ ओ३म् जय ॥



आवृती भंग्रह

अंबे स्तुति

जगदंबे अंबे महारानी सहाय करी जो ए ।
 शरणे आया सेवक ने मैया सहाय दीजो ए ॥ जगदम्बे अम्बे..... ॥
 महाकाली कलकते वाली तोय मनाऊँ ए ।
 पापी दुष्टों चांडाल ऊपर बदछो मारी जे ए ॥ जगदम्बे अम्बे..... ॥
 करज्यो जंगल में मंगल, म्हारी मात भवानी ए ।
 भूल्या चुक्या न सुध बुध दीजो मात भवानी ए ॥ जगदम्बे अम्बे..... ॥
 गावे गिरधर गोपाल मैया दास तिहारो ए ।
 शरणे आया भक्तां पर मैया माहर करी जो ए ॥ जगदम्बे अम्बे..... ॥

ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ

आरती मातेश्वरी की

आरती उतार्लं जगदम्बे, मेरी भी तो स्वीकार करो ।
 चरणों में तो दास रहूँ स्वपने को माँ साकार करो ॥
 न फूल न पाती पास मेरे, न दीप न बाती साथ मेरे ।
 दोनों हाथों से नमन मेरा, जगदम्बे माँ स्वीकार करो ॥
 अभिलाषा मेरी समझो माँ, समझा दो मेरे इस मन को ।
 मैं भटक रहा हूँ इधर उधर, राह बतलाना स्वीकार करो ॥
 सुख सम्पति देती है मैया, कट्ठों को मिटाती है मैया ।
 मैं भजा करूँ मैं जपा करूँ, आशीष देना स्वीकार करो ॥
 विपदा मण्डराती रहती है, संकट भी माँ कोशिश करे ।
 पाताल मेरा मंजूर नहीं, नभ पहुंचाना स्वीकार करो ॥
 स्वीकार करो ये पुष्प पँखुड़ी और गूंथी हुई माला को ।
 चप्पा चप्पा गूंज उठा, जय हो ज्वाला माता की ॥

ऋ ऋ ऋ ऋ ऋ

जय भवानी

(तर्ज— टूटे हुए ख्वाबों ने हमको.....)
 जगदम्बे भवानी माँ, चरणों में बिठाओ ना ।

आकृती स्थंगह

अम्बे अम्बे अर्दास सुनो, हिवडे से लगावो ना।
 मैं पतित पतंगा हूं जैसा भी हूं तेरा हूं।
 बिखरा हुआ गुलशन हूं टूटा सा बसेरा हूं—२।
 चरणों में जगह दे दो, मत दूर बिठाओ माँ।
 अंबे अंबे अर्दास सुनो..... || १ ||

यूं छोड़ मे मत जावो, घनघोर घटाओं में।
 आचल नं छुड़ावो माँ, सुनसान सी राहों में—२।
 ममतामयी जगजननी, इतना तो सताओ ना।
 अंबे अंबे अर्दास सुनो..... || २ ||

तेरे छत्र की छाया में, हमको भी पुकारो माँ।
 जननी की तरां थोड़ा, हमको भी दुलारो माँ—२।
 आखिर तो तुम्हारा हूं रिश्ते न भालाओ ना।
 अंबे अंबे अर्दास सुनो..... || ३ ||

ओ सर्व मंगल माँ, दुर्गा महारानी माँ।
 कर जोड़ रमेश खड़ा है, जग कल्याणी माँ—२।
 तेरे दरस के प्यासे हैं, दर्शन तो दिखाओ ना।
 अंबे अंबे अर्दास सुनो..... || ४ ||



भजन

तर्ज - व्याव बीनणी बिलखूं मैं तो

दधिमथी माता बिलखा म्हें तो, कद थारा दर्शन पावाँ।
 इतरी तो करी महर, साल में एकर तो मंदिर आवां। टेर।
 गोठ मांगलोद बीच बिराज, माँ दधमन्ता कहलाये।
 देश देश का आवे है, यात्री चरणों में शीशा निवाये।
 सब की मंशा पूरण करनी, म्हें सब थारा गुण गावां।
 इतरी तो कर महर..... || १ ||
 ज्योत अखण्ड जल मिज मन्दिर, अधररखम्भ महिमा गाव।

आश्ती स्थंघः

इमरत नीर कुण्ड में भरियो, देव सिनान करण आव।
धजा फरख असमाना मे— २, निरख निरख म्हें हरषावां।
इतरी तो कर महर..... ॥ २ ॥
हाथ जोड़कर कर करा चाकरी, रिद्धि सिद्धि सम्पत सारी।
नाच भैरूं गजानंद, बजरंगी भोला भण्डारी।
ढोल नगाड़ा नौबत बाज—२, शोभा म्हें नहीं कह पावाँ।
इतरी तो कर महर..... ॥ ३ ॥
म्हाकी मरजी चल नहीं, तू चाव जद मिलणो होव।
माँ सलटाव काम घणेरा, टाबर पड़यो पड़यो रोव।
सुण ये मां म्हें टाबर थारा—२, तन छोड़ अब सिध जावाँ।
इतरी तो कर महर..... ॥ ४ ॥

फरियाद

(तर्ज— एक तेरा साथ.....)

माँ भवानी आ, तुम्हारे लाल ने पुकारा है।
देखो ना बे सहारा है। माँ भवानी आ....
दीन दुखियारा, दामन में है कांटे, नयन में नीर है।
साथ ना छोड़ो, दो पल भी जीवन में, ये कैसी पीर है।
तारो मेरी मां—२, तुम्हारा नाम भी तो तारा है।
देखो ना बे सहारा है। माँ भवानी आ....
ना मेरा कोई, जीवन में संगी है, न कोई साथ है।
लाल तेरा हूं, फिर भी अकेला हूं निराली बात है।
रखियो सिर पर हाथ—२, मेरी माँ तूने क्यों बिसारा है।
देखो ना बे सहारा है। माँ भवानी आ....
दे दुखी अंबे हे, मात जगदम्बे, दुखों को दूर कर।
दे करम अच्छे, हम है तेरे बच्चे, नाम मशहूर कर।
अर्जी करता पेश—२, ये रमेश माँ तुम्हारा है।
देखो ना बे सहारा है। माँ भवानी आ....

॥१॥ तिमलिं ॥ लाल कर्कि लालिं लकुरि गुरि
 ॥२॥ तिमलिं ॥ लाल कर्कि लिं लिं लिं लिं
 ॥३॥ तिमलिं ॥ लाल कर्कि लिं लिं लिं लिं
 ॥४॥ तिमलिं ॥ लाल कर्कि लिं लिं लिं लिं

प्रार्थना

माँ अम्बे अरदास है, विनय करूँ कर जोर।
 दीन हीन पावे सदा, तेरे चरणा ठोर ॥ भवानी.....
 श्रीफल और मेवा लिए आए सकल जहान।
 माँ अम्बे रानी सती, सदा करो कल्याण ॥ भवानी.....
 दया करो अम्बे मेरी माँ, दूर करो अज्ञान।
 गलती सभी विसारियो, बालक आपनो जान ॥ भवानी.....
 धीरज धर द्वारे तेरे, जो भी दुखिया आये।
 झोली खुशियों से भरी, वापस लेकर जाए ॥ भवानी.....
 मन से जो ध्याये सदा, सकल कष्ट कट आए।
 कोढ़ी को काया मिले, निर्धन सम्पति पाए ॥ भवानी.....
 थिरक थिरक नाचे सभी, बाजे ढोल नगारे।
 ममता की वर्षा सदा, हो तेरे दरबारे ॥ भवानी.....
 मांगे इस दरबार में जोड़े हाथ रमेश।

॥५॥ तिमलिं लिमलिं लिमलिं लिमलिं

॥६॥ तिमलिं लिमलिं लिमलिं लिमलिं

स्तुति

सेवक पगा उभाणो चाल, दधिमथी मां मिल जासी जी मिल जासी।
 दधिमथी मां को धरले ध्यान, दधिमथी मां मिल जासी जी 2॥
 तेरी पल पल छीजे हाड़, संकट कट जासी जी कट जासी।
 तू गोठ मांगलोद नगरिया चाल, दधिमथी मां मिल जासी जी 2॥
 भोर भयो क्यूँ सो रहयो, इब उठ कर स्नान ॥ दधिमथी मां॥
 रोली मोली चावल लेकर, दधिमथी मां के मंदिर चाल ॥ दधिमथी मां॥
 दधिमथी मां को करले ध्यान, तेरो बेड़ा हो जागो पार ॥ दधिमथी मां॥

आश्रुती ख्यात्वह

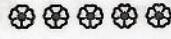
सीरो, चूरमो और पेड़ा नारियल, मोदक भरकर थाल ॥ दधिमथी मां ॥
 चार दिनों का मेलो छेलो, के काया को लाई ॥ दधिमथी मां ॥
 भीड़ देखकर डर मत जाइये, भीड़ घणी अपरम पार ॥ दधिमथी मां ॥
 दधिमथी मां 2 रटतो जो, कोई दधिमथी मां खड़ी तेरे पास ॥ दधिमथी मां ॥
 याद करे जद दौड़ो आये, तेरो संकट देवे काट ॥ दधिमथी मां ॥
 तू दधिमथी मां के मंदिर चाल, दधिमथी मां मिलजासी जी मिल जासी ॥
 तू गोठ मांगलोद नगरिया चाल, संकट कट जासी जी कट जासी ॥
 दधिमथी मां ॥
 सेवक रमेश चन्द पगा उबाणों चाल, दधिमथी मां मिल जासी जी मिल जासी ॥



नवार्ण मन्त्र प्रकाश गीतिका

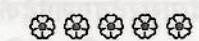
(गजल कव्वाली ताल कहरवा)

ओंकार आदि मंत्रों की ईश्वरी तुम ही हो।
 ऐ अम्बे! अधमात्रा सिर पर धरो तुम ही हो॥ 1॥
 न्हीं शून्य रूप वाली मेघा दया क्षमा हो।
 लकीं बिन्दु नादिनी हो कामेश्वरी रभा हो॥ 2॥
 चाम्पेय गौर अभायुत देह धारिणी हो।
 मुण्डादि दानवों की प्राणपहारिणी हो॥ 3॥
 डाढ़े कराल धरती पर तुम उग्र कालिका हो।
 ये सी विभक्ति रूपी तुम शब्द पालिका हो॥ 4॥
 विद्या तुम्हीं परा हो आनंदकारिणी हो।
 चेतन हो हरिहरादिक के नाम धारणी हो॥ 5॥
 तुम तो सभी चराचर दिन रात ध्या रहे हैं।
 है धन्य तुम्हारे गुण गान गा रहे हैं॥ 6॥



स्तुति

दधिमथी माता को सुमरण कर ले, भव से पार उतर जासी।
 दधिमथी माता ने सुमरण कर ले, तेरा संकट कट जासी॥
 दधिमथी माता को शरणों ले ले, नहीं कलयुग में बह जासी।
 मिनख जमारो अमोलख खोवे, फिर कुण जाए कद आसी॥
 कंचन का कोठार भरया छ, इक दिन ताला खुल जासी॥ दधिमथी॥
 कुटुम्ब कबीला सब मतलब का, एक न थारे संग जासी।
 मात पिता पुत्र और नारी, सब है मतलब का साथी॥
 धन जीवन को रंग छ फीको पल में रंग उतर जासी॥ दधिमथी॥



चतुर्थोऽध्यायः

ध्यानम्

ओ३म् कालाप्राभां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
 शंडखं चकं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्धहन्तीं त्रिनेत्राम्।
 सिंहस्कन्धाधिरुद्धां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
 ध्यायेद् दुर्गा जयारुद्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः॥

ओ३म् ऋषिरुवाच ॥ १ ॥

शकादयः सुरगणा निहतेऽतिवीर्ये
 तस्मिन्दुरात्मनि सुरारिबले च देव्या ।
 तां तुष्टुवुः प्रणतिनप्रशिरोधरांसा
 वाग्भिः प्रहर्षपुलकोदगमचारुदेहाः॥
 देव्या यया ततमिदं जगदात्मशक्तया
 निश्शेषदेवगणशक्तिसमूहमूर्त्या
 तामम्बिकामखिलदेवमहर्षिपूज्यां
 भक्त्या नताः र्म विदधातु शुभानि सा नः॥
 यस्याः प्रभावमतुलं भगवाननन्तो

आश्चर्ती स्थंग्रह

ब्रह्मा हरश्च न हि वक्तुमलं बलं च ।
 सा चण्डिकाखिलजगत्परिपालनाय
 नाशाय चाशुभयस्य मतिं करोतु ॥
 या श्रीः स्वयं सुकृतिनां भवनेष्वलक्ष्मीः
 पापात्मनां कृतधियां हृदयेषु बुद्धिः ।
 श्रद्धा सतां कुलजनप्रभवरस्य लज्जा
 तां त्वां नताः रम परिपालय देवि विश्वम् ॥
 किं वर्णयाम तव रूपमचिन्त्यमेतत्
 किं चातवीर्यमसुरक्षयकारि भूरि ।
 किं चाहवेषु चरितानि तवाद्वृतानि
 सर्वेषु देव्यसुरदेवगणादिकेषु ॥
 हेतुः समस्तजगतां त्रिगुणापि दोषै—
 न ज्ञायसे हरिहरादिभिरप्यपारा ।
 सर्वाश्रयाखिलमिदं जगदंशभूत—
 मव्याकृता हि परमा प्रकतिस्त्वमाद्या ॥
 यस्याः समस्तसुरता समुदीरणेन
 तृप्तिं प्रयाति सकलेषु मखेषु देवि ।
 स्वाहासि वै पितृगणस्य च तृप्तिहेतु—
 रूच्यार्यसे त्वमत एव जनैः स्वधा च ॥
 या मुकितहेतुरविचिन्त्यमहाव्रता त्व—
 मध्यस्यसे सुनियतेन्द्रियतत्वसारैः ।
 मोक्षार्थिभिर्मुनिभिरस्तसमस्तदोषै—
 विद्यासि सा भगवती परमा हि देवि ॥
 शब्दात्मिका सुविमलर्घ्यजुषां निधान—
 मुद्गीथरम्यपदपाठवतां च साम्नाम् ।
 देवी त्रयी भगवती भवभावनाय
 वार्ता च सर्वजगतां परमार्तिहन्त्री ॥
 मेधासि देवि विदिताखिलशास्त्रसारा
 दुर्गासि दुर्गभवसागरनौरसमड़ंग ।
 श्रीः कैटभारिहृदयैककृताधिवासा

आष्टृती स्तंग्रह

गौरी त्वमेव शशिमौलिकृतप्रतिष्ठा ॥
 ईषत्सहासममलं परिपूर्णचन्द्र—
 बिम्बानुकारि कनकोत्तमकान्तिकान्तम् ।
 अत्युद्गुतं प्रहृतमात्तरुषा तथापि
 वक्त्रं विलोक्य सहसा महिषासुरेण ॥
 दृष्टवा तु देवि कुपितं भुकुटीकराल—
 मुद्यच्छशाङ्कसदृशच्छवि यन्न सद्यः ।
 प्राणान्मुमोच महिषस्तदतीव चित्रं
 कैर्जीव्यते हि कुपितान्तकदर्शनेन ॥
 देवी प्रसीद परमा भवती भवाय
 सद्यो विनाशयसि कोपवती कुलानि ।
 विज्ञातमैतदधुनैव यदस्तमेत—
 न्नीतं बलं सुविपुलं महिषासुरस्य ॥
 ते सम्मता जनपदेषु धनानि तेषां
 तेषां यशांसि न च सीदति धर्मवर्गः ।
 धन्यास्त एव निभृतात्मजभृत्यदारा
 येषां सदाभ्युदयदा भवती प्रसन्ना ॥
 धर्म्याणि देवि सकलानि सदैव कर्मा—
 ण्यत्यादृतः प्रतिदिनं सुकृति करोति ।
 स्वर्गं प्रयाति च ततो भवती प्रसादा—
 ल्लोकत्रयेऽपि फलदा ननु देवि तेन ॥
 दुर्गे स्मृता हरसि भीतिमशेषजन्तोः
 स्वरथैः स्मृता मतिमतीव शुभां ददासि ।
 दारिद्र्यदुःखभयहारिणी का त्वदन्या
 सर्वोपकारकरणाय सदाऽऽद्रचिता ॥
 एभिर्हतैर्जगदुपैति सुखं तथैते
 कुर्वन्तु नाम नरकाय चिराय पापम् ।
 संग्राममृत्युमधिगम्य दिवं प्रयान्तु
 मत्वेति नूनमहितान् विनिहंसि देवि ॥
 दृष्ट्वैव किं न भवती प्रकरोति भस्म

आकृती स्थंगह

सर्वासुरानरिषु यत्प्रहिणोषि शस्त्रम् ।
 लोकान् प्रयान्तु रिपवोऽपि हि शस्त्रपूता
 इत्थं मरिभवति तेष्वपि तेऽतिसाध्यी ॥
 खड्गप्रभानिकरविस्फुरणैस्तथोग्रे:
 शूलाग्रकान्तिनिवहेन दृशोऽसुराणाम् ।
 यन्नागता विलयमशुमदिन्दुखण्ड—
 योग्याननं तव विलोयतां तदेतत् ॥
 दुर्वृतवृतशमनं तव देवि शीलं
 रूपं तथैतदविचिन्त्यमतुल्यमन्यैः
 वीर्यं च हन्तृ हृतदेवपराक्रमाणां
 वैरिष्वपि प्रकटितैव दया त्वयेत्थम् ॥
 केनोपमा भवतु तेऽस्य पराक्रमस्य
 रूपं च शत्रुभयकार्यतिहारि कुत्रि ।
 चित्ते कृपा समरनिष्ठुरता च दृष्टा ।
 त्वयेव देवि वरदे भुवनत्रयेऽपि ॥
 त्रैलोक्यमेतदखिलं रिपुनाशनेन
 त्रातं त्वया समरमूर्धनि तेऽपि हत्वा ।
 नीता दिवं रिपुगणा भयमप्यपास्त—
 मस्माकमुन्मदसुरारिभवं नमस्ते ॥
 शूलेन पाहि नो देवि पाहि खड्गेन चाम्बिके ।
 घटास्वनेन नः पाहि चापज्यानि: स्वनेन च ॥
 प्राच्यां रक्ष प्रतीच्यां च चण्डिके रक्ष दक्षिणे ।
 भ्रामणेनात्मशूलस्य उत्तरस्यां तथेश्वरि ॥
 सौम्यानि यानि रूपाणि त्रैलोक्ये विचरन्ति ते ।
 यानि चात्यर्थघोराणि तै रक्षास्तांस्तथा भुवम् ॥
 खड्गशूलगदादीनि यानि चास्त्राणि तेऽम्बिके ।
 करपल्लवसङ्गीनी तैरस्मान् रक्ष सर्वतः ॥

(ऋषिस्त्वचाच)

एवं स्तुता सुरैर्दिव्यैः कुसुमैर्नन्दनोद्भवैः ।
 अर्चिता जगतां धात्री तथा गन्धानुलेपनैः ॥

आश्वती संग्रह

जर्णे लिखा भक्त्या समस्तैत्रिदशोर्दिवयैर्धूपैरस्तू धूपिता ।
 जेठे लिखा प्राह प्रसादसुमुखी समस्तान् प्रणतान् सुरान् ॥
(देव्युवाच)
 व्रियतां त्रिदशाः सर्वे यदस्मतोऽभिवाञ्छितम् ॥
(देवा ऊचुः)
 भगवत्या कृतं सर्वं न किञ्चिदवशिष्यते ॥
 यदयं निहितः शत्रुरस्माकं महिषासुरः ।
 यदि चापि वरो देयस्त्वयास्माकं महेश्वरि ॥
 संस्मृता संस्मृता त्वं नो हिंसेथा परमापदः ।
 यश्च मर्त्यः स्तवैरेभिस्त्वां स्तोष्यत्यमलानने ॥
 (उच्चारण्डिता) तस्य वित्तर्दिविभवैर्धनदारादिसंपदाम् ।
 वृद्धयेऽस्मत्प्रसन्ना त्वं भवेथाः सर्वदाम्निके ॥
(ऋषिस्त्वाच)
 इति प्रसादिता दैवेर्जगतोऽर्थे तथाऽह्मनः ।
 तथेत्युक्त्वा भद्रकाली बभूवान्तर्हिता नृप ॥
 इत्येतत्कथितं भूप संभूता सा यथा पुरा ।
 देवी देवशरीरेम्यो जगल्त्रयहितैषिणी ॥
 पुनश्च गौरीदेहात्सा समुद्घूता यथाभवत् ।
 वधाय दुष्टदैत्यानां तथा शुभ्मनिशुभ्योः ॥
 रक्षणाय च लोकानां देवानामुपकारिणी ।
 तच्छृणुष्व मयाऽऽरव्यातं यथावत्कथ्यामि ते ॥ हीं ओऽम् ॥
 इति श्री मार्कण्डेयपुराणे सावर्णिके मन्वन्तरे देवीमाहात्म्ये
 शकादिस्तुतिर्नाम चतुर्थोऽध्यायः ॥ 4 ॥
 उवाच 5 अर्धश्लोकौ 2, श्लोकाः 35, एवम् 42, एवमादितः 259 ॥



कुलदेवी दधिमथी प्राकटय एवं चमत्कार

महर्षि दधिची की पावन भागिनी महामाया भगवती दधिमथी भारत वर्ष के विभिन्न प्रान्तों में बसे लाखों दाधीच (दाहिमा) ब्राह्मणों की कुल

आ॒ष्टी॑ सं॒ग्रह

देवी है। दाधीच ब्राह्मणों का कोई भी धार्मिक संस्कार बिना भगवती दृष्टि मर्थी की पूजा अर्चना के पूर्ण नहीं हो सकता। महामाया भगवती दृष्टि मर्थी की पुण्य भूमि राजस्थान राज्यान्तर्गत नागौर मण्डल मारवाड़ प्रदेश (गोठ मांगलोद ग्राम) में दाधीच कुल देवी सर्वत्र अपनी अनुपम सुषमा विखेर रही है एवं कुल देवी मंदिर दाधीच समाज का श्रद्धा केन्द्र है। अपनी मनौतियों, बच्चों का मुण्डन संस्कार, जात, जड़ूला हेतु दोनों नवरात्रियों सहित वर्ष भर श्रद्धालु यहां आते रहते हैं।

शेषशायी भगवान विष्णु के नाभिकमल से ब्रह्माजी उत्पन्न हुए। और उनके तपोबल से उत्पन्न दस पुत्रों में महर्षि अर्थर्वा ऋषि भी थे जो अर्थर्वेद के प्रणेता माने जाते हैं। उन्होंने जल में बिना किसी अरणी मंथन के अग्नि का प्रादुर्भाव कर वैज्ञानिक ढंग से प्राणभूत ऊर्जा (हाइड्रोपावर) का आविष्कार किया। यह मानव इतिहास में उनका प्रथम वैज्ञानिक योगदान था। वे परम तेजस्वी एवं भगवान के परम भक्त थे। उनका विवाह कर्दम ऋषि की विदुषी पुत्री शान्ता से हुआ। वे प्रजापति कहलाए।

भगवती का अवतरण

महर्षि अर्थर्वा की पत्नी शांता ने भगवती लक्ष्मी की तपस्या की। भगवती लक्ष्मी ने वरदान देते हुए कहा कि दैत्यराज विकटासुर का वध करने हेतु मैं तुम्हारे यहां पुत्री के रूप में जन्म लूंगी और देवताओं को अभय प्रदान करूंगी। इसके पश्चात भगवती लक्ष्मी ने शांता की पुत्री के रूप में जन्म लिया, जिसका नाम नारायणी हुआ।

सृष्टि के प्रारंभ से ही और असुर शक्ति का अस्तित्व रहा है। आधिमकता, नैतिकता, सदाचार एवं समर्पण की भावना देवी भक्ति का एवं भौतिक बल के माध्यम से सभी को अपने अधीन करने की लालसा, अनाचार, अमैत्री, अत्याचार आदि आसुरी शक्ति का घोतक है।

उस समय आसुरी शक्ति के प्रतिनिधि दैत्यराज विकटासुर ने कठोर तपस्या करके ब्रह्माजी से अमरता का वरदान मांगा। किन्तु मृत्यु तो अवश्यम्भावी है। अतः स्त्री (जिसे वह अबला समझता था) को छोड़कर

अजेयता का वरदान ब्रह्माजी ने दिया।

वरदान पाकर दैत्यराज का आसुरी बल और अधिक बढ़ गया। उसने स्वर्ग, पाताल, नागलोक आदि को जीतकर देवताओं को राजश्री हीन कर दिया। आसुरी व मायावी शक्ति के माध्यम से स्वयं ब्रह्माजी की ब्रह्मशक्ति भी छीन ली, जिससे सृष्टि निर्माण की प्रक्रिया अवरुद्ध हो गई। दैत्यगुरु शुक्राचार्यजी की कृपा से उसने समुद्र में चन्द्रवती नामक विशाल नगरी का निर्माण करवाया और उसमें रहने लगा। योजनाबद्ध तरीके से पृथ्वी और देव लोक में वह अत्याचार करने लगा। देव और ऋषि संस्कृति में विश्वास करने वालों का विश्वास डगमगा गया। सभी और त्राहि त्राहि मच गई। प्रतिकार की क्षमता नष्ट हो गई।

विकटासुर का वध

दैत्यराज विकटासुर के अत्याचारों से त्रस्त सभी देवगण भगवान विष्णु की शरण में गए। भगवान विष्णु ने देवताओं को आशवस्त करते हुए बताया कि विकटासुर का वध कर संसार में पुनः देव संरकृति स्थापित करने एवं समस्त प्राणियों को अभय प्रदान करने के लिए योगमाया महालक्ष्मी भगवती नारायणी के रूप में महर्षि अर्थर्वा के घर में प्रकट हुई है। वही इस दैत्य का नाश करेगी। आप वहीं जावें।

भगवान विष्णु के निर्देश पर सभी देवगणों ने महर्षि अर्थर्वा के आश्रम पर पहुंचकर भगवती नारायणी की अर्चना प्रार्थना की। देवताओं की प्रार्थना से प्रसन्न होकर भगवती ने उन्हें अभय का वरदान दिया। स्वयं अर्थर्वानिदिनी ने सभी दिव्यास्त्रों को धारण कर सिंह पर आरूढ़ होकर सप्त सिंधुओं का मंथन किया। विकटासुर को ब्रह्माजी के द्वारा दिए गए वरदान का स्मरण आते ही कि (मेरी मृत्यु सिर्फ स्त्री से ही हो सकती है) देवी के भय से दधि सागर में जाकर छिप गया।

इस पर भगवती ने दधि सागर का मंथन कर माघ शुक्ला अष्टमी को संध्याकाल में विकटासुर का वध किया। यह तिथि जन्माष्टमी के नाम से विख्यात है।

आत्मीयसंग्रह

दधिमथी का नामकरण

दैत्यराज विकटासुर का वध से देवताओं की खोई हुई शक्ति पुनः प्राप्त हुई। ब्रह्माजी का सृष्टि सृजन का कार्य पुनः सामान्य हुआ। ब्रह्माजी ने दधि सागर का मंथन कर विकटासुर का वध करने वाली अर्थवार्नदिनी का नाम दधिमथी रखा तथा महर्षि अर्थर्वा को पुत्र प्राप्ति का वरदान दिया तथा भगवती दधिमथी अपने भाई के वंश की रक्षा करती हुई उनकी कुलदेवी होने का आशीर्वाद दिया।

पिप्पलाद का पालन-

कालांतर में महर्षि अर्थर्वा पुत्र दधिची द्वारा विश्व कल्याण एवं देश धर्म की रक्षा हेतु दैत्यराज वृतासुर के वध के लिए अपनी अरिथ्यां प्रदान करने के बाद उनकी पत्नी वेदवती जो कि गर्भवती थी, सती होने को तत्पर हुई। तब अग्निदेव सहित सब देवताओं ने ऋषि पत्नी को स्मरण कराया कि आपके गर्भ में जो ऋषि का तेज विद्यमान है, वह रुद्रावतार है। पहले आप उसे उत्पन्न करे। इस पर ऋषि पत्नी ने शाल्य किया द्वारा अपना गर्भ निकाल कर आश्रम में ऋषि द्वारा स्थापित अश्वस्थ वृक्ष (पीपल का पेड़) को सौंपते हुए गर्भस्थ बालक के रक्षा की प्रार्थना की। ऋषि पत्नी ने भगवती दधिमथी से प्रार्थना करते हुए कहा कि आप ही हमारी कुलदेवी हैं। आप इस दाधीच कुल की रक्षा करें। कुलदेवी दधिमथी के सान्निध्य में पीपल वृक्ष पलने के कारण महर्षि दधिची के पुत्र का नाम पिप्पलाद हुआ। ब्रह्माण्ड पुराण के विश्वोत्पत्ति प्रकरण में निम्न श्लोक द्वारा इसकी पुष्टि की है।

श्रीमन्नाशुर्यण्ड ब्रह्मा ब्रह्मणोऽथर्व विन्मुनिः।
दध्युड्गथर्वणः तस्मात् पिप्पलादो भवत्मुनिः॥

पिप्पलाद एक तपोनिष्ठ महर्षि हुए। उनका विवाह चक्रवर्ती राजा अनरण्य की पुत्री पदमा से हुआ। उनके 12 तेजस्वी पुत्र हुए (बृहद्वत्स, गौतम, भार्गव, भारद्वाज, कौच्छस, कश्यप, शाण्डिल, अत्रि, पराशर, कपिल, गर्ग और लघुवत्स मम) जो बड़े विद्वान और तपस्वी

हुए। इन्होंने अनेक उत्कृष्ट सिद्धियां प्राप्त की। बृहद्वत्स एवं गौतम का विवाह अंगिरा की कन्याओं एवं बाकी दस ऋषियों का विवाह देव शर्मा की कन्याओं से हुआ। इन बारह ऋषियों के 144 पुत्र हुए। वे भी बड़े विद्वान् और तपस्वी हुए। कुलदेवी भगवती दधिमथी की आराधना से इनका प्रभाव बढ़ता ही गया।

कपालपीठ का प्राकट्य एवं राजा मान्धाता का यज्ञ

दक्ष प्रजापति के यज्ञ में अपने पति का अपमान एवं अपने पिता दक्ष द्वारा शिव निन्दा की ज्वाला से पीड़ित सती ने सशरीर यज्ञकुण्ड में प्रवेश किया। तब भगवान् आशुतोष शंकर ने सती के शव को अपने कंधे पर रखकर भ्रमण किया। जहां जहां सती के शरीर के अवशेष गिरे, वे स्थान पवित्र शक्तिपीठ कहलाए। भगवती सती का कपाल पुष्कर क्षेत्रों से 32 कोस उत्तर में गोठ मांगलोद दो गांवों के बीच गिरा जो कपालसिद्ध पीठ से प्रसिद्ध है।

त्रेता युग में सूर्यवंशी अयोध्यापति राजा मान्धाता का पुराण प्रसिद्ध सात्यिक देवेशी (दधिमथी) यज्ञ महर्षि वशिष्ठ की आज्ञा से इसी कपालपीठ क्षेत्र में हुआ। जिसके आचार्य महर्षि पिप्पलाद के 144 पौत्र थे। माघ शुक्ल सप्तमी को पूर्णाहूति के अवसर पर देवी दधिमथी का प्राकट्य हुआ। देवी ने यजमान एवं आचार्यों को आशीर्वाद प्रदान करते हुए राजा मान्धाता को कपाल पीठ पर मंदिर निर्माण का आदेश दिया। तत्काल यज्ञकुण्ड को जल में परिवर्तित करते हुए भगवती महामाया ने आशीर्वाद दिया कि जलकुण्ड में त्रिवेणी (गंगा, जमुना और सरस्वती) का निवास रहेगा। इसमें स्नान करने एवं कपालपीठ का दर्शन पूजन करने वाले सभी पापों से मुक्त होंगे। दाधीच वंश की कुल देवी होने के नाते मेरी आराधना करने पर दाधीच कुल बुद्धिमान, यशस्वी एवं कुलवंत होंगे। मैं उनकी सदैव रक्षा करूंगी। जो भी व्यक्ति मेरी मनौती करेगा उसकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होंगी। राजा मान्धाता ने कपालपीठ पर मंदिर का निर्माण करवाया। तबसे यह कपालपीठ एक पवित्र तीर्थ स्थल माना जाता है।

श्रुतियों के अनुसार राजा मान्धाता द्वारा निर्मित यह मंदिर अनेक वर्षों तक गुप्त रही। बाद में एक दिन इसी स्थान पर गाय चरा

आवृती व्याख्या

रहे ग्वाले को आकाशवाणी से महामाया दधिमथी ने संकेत दिया कि मैं भूमि से पुनः प्रकट हो रही हूं। अगर गायें भड़क जावें तो भयभीत मत होना। जब देवी प्रकट हो रही थी उसी समय सिंह की गर्जना सुनकर गायें भड़क उठीं। ग्वाला देवी की बात भूल कर चिल्ला उठा जिसके फलस्वरूप देवी का पूरा स्वरूप ने निकलकर मात्र कपाल का ही प्राकट्य हुआ।

ऋषियों एवं देवी द्वारा देवी पूजन के दिन

पुष्कर के वासी दिव्य ऋषिगण वारानुकम से रविवार को महर्षि वशिष्ठ, सोमवार को वामदेव, मंगलवार को कपिल, बुधवार को अगरत्य, गुरुवार को अथर्वा, शुक्रवार को अंगिरा, शनिवार को अत्रि, नवरात्रि में मार्कण्डेय, महारात्रि दीपावली को भगवान् विष्णु, मोहरात्रि जन्माष्टमी को ब्रह्माजी एवं कालरात्रि शिवरात्रि को भगवान् शिव कपाल पीठ पर आकर भगवती दधिमथी की पूजा अर्चना करते हैं। द्वापर में पाण्डव अज्ञातवास के काल में कपालपीठ के दर्शन करते हुए पुष्कर तीर्थ गये इसका उल्लेख पुराणों में मिलता है।

भगवती दधिमथी के चमत्कार

सन 1231 में विदेशी कूर धर्मान्ध आक्रमणकारी मोहम्मद गजनवी भारत में मंदिर ध्वरत करने के अपने अभियान के अन्तर्गत गोठ मांगलोद का मंदिर और कपालपीठ तोड़ने आया था। उस समय देवी चमत्कार से काले भंवरों ने सैनिकों पर भयानक आक्रमण कर दिया। मंदिर तोड़ने में असफल होने का कारण उसने कपालपीठ पर एक शिला रख कर उसको ढ़क दिया। सम्वत् 1903 में ब्रह्मचारी विष्णुदासजी के यहां पहुंचने पर उस शिला के चमत्कारिक ढंग से 5 टुकड़ों में विखंडित होने का विवरण मंदिर में लगे शिलालेख में उद्धृत है।

दाधिच कुल भूषण सिद्ध ब्रह्मचारी बुद्धादेव (मेवाड़) निवासी श्री विष्णुदासजी महाराज ने कुलदेवी दधिमथी के कपाल पीठ को अपनी तपस्या स्थली बनाया। उन्होंने यहां अनेकों गायत्री के पुरश्चरण किये। भगवती की आज्ञा से वे उदयपुर गये। मार्ग में लकड़ी काटते एक बालक को देख कर उसे उदयपुर का राणा बनने की भविष्यवाणी की। बालक ने अपनी निर्धनता की बात बताई। इस पर ब्रह्मचारीजी ने कहा कि

भगवती दधिमथी की कृपा से उदयपुर का राजतिलक तेरे ललाट पर ही लगेगा, तू उदयपुर जा। इधर उदयपुर की राजगद्दी को लेकर दो पक्षों के बीच संघर्ष चल रहा था। प्रजा ने निर्णय किया कि ये दोनों पक्ष ही इस गद्दी पर बैठा दिया जाये। भगवती के चमत्कार से वही निधि नि बालक जंगल में प्रजाजनों को मिला। उसका नाम स्वरूपसिंह रखा गया। कालांतर में भगवती ने महाराणा को अनेकों परचे दिये। उनको भगवती कृपा से पुत्र की प्राप्ति भी हुई।

मंदिर में लगे सम्वत् 1908 के शिलालेख के अनुसार ब्रह्मचारी विष्णुदासजी महाराजा की आज्ञा से महाराणा स्वरूपसिंहजी द्वारा मंदिर के गर्भगृह एवं सभामंडप के बाहर के छौक, तिबारियां, प्रकोष्ठ, दरवाजे, चारदीवारी, यात्री निवास, बावड़ी, शिवमंदिर आदि का निर्माण एवं कुण्ड का जीर्णोद्धार हुआ।

जोधपुर की महारानी की रोगमुक्ति भी भगवती की मनौती से चमत्कारी ढंग से हुई जिस पर जोधपुर राज्यवंश ने मंदिर विकास में अपना योगदान किया। राणाजी के प्रधान शेरसिंहजी, जैसलमेर के पटवा जोरावरमलजी ने भी मंदिर विकास में अपना सहयोग दिया।

मंदिर में नवरात्रियों की सप्तमी एवं अष्टमी को श्रद्धालु भक्तजनों द्वारा श्री सूक्तम के मंत्रों से दुर्घाभिषेक होता है। चाहे जितने दूध से अभिषेक किया जावे, भगवती का चमत्कार है वह कुंडी से बाहर कभी भी छलकता नहीं है।

सम्वत् 2025 में इस कपालपीठ क्षेत्र में भयंकर बाढ़ से चारों और का क्षेत्र जलप्लावित हो गया। तथा मंदिर की चारदीवारी के बाहर अथाह जल था। किन्तु गर्भगृह में बाढ़ का पानी नहीं पहुंच पाया तथा ऐसी बाढ़ में पुजारीगण लोहे के कढ़ाव को नाव की तरह उपयोग में लेते हुए भगवती की नियमित पूजा अर्चना के लिए मंदिर तक पहुंचते थे। यह भी एक कौतहूल पूर्ण चमत्कार है। इस प्रकार भगवती के अनेकों चमत्कार लोगों ने प्रत्यक्ष देखे हैं।

भगवती दधिमथी के संबंध में आम मान्यता है कि ये जहां दुर्घाभिषेक करवाता है, धी का अखंड जोत (दीपक) स्थापित करता है, मंदिर में अपनी मनौती के लिए नारियल धजा और चूनड़ी अर्पण करता है। चूरमा का नैवेद्य चढ़ाता है, उसकी मनोकामना निश्चित ही पूर्ण होती

आकृती स्थान

है। दाधिच समाज के लोग तो यहां अनिवार्य रूप से आते ही हैं वरन् इस क्षेत्र के तथा दूर दूर के अन्य समाज एवं संप्रदाय के श्रद्धालु भी अपनी मनोकामना की पूर्ति हेतु देवी के दर्शनार्थ बारहों मास आते रहते हैं तथा भगवती को अपनी कुलदेवी के रूप में पूजते हैं।

दोनों नवरात्रियों में विशाल मेले भरते हैं। इस अवसर का तो आनंद ही निराला है। दाधिच समाज के लोग जो सप्तमी के पूर्व ही आ जाते हैं। दूर दूर से आये बंधु आपसी परिचय सगाई संबंधों की चर्चाओं के साथ साथ समाज एवं मंदिर विकास की योजनाएँ बनाते हैं। अनेकों तपस्ची पूरी नवरात्रि यहां उपासना करते हैं। मंदिर एवं मेले की सारी व्यवस्था दाधीच समाज की एवं सभी संस्थाओं द्वारा की जाती है। भगवती की पूजा अर्चना पाराशर समाज के पुजारी ही करते हैं।

यह स्थान नागौर जिले में जायल तहसील के अन्तर्गत गोठ मांगलोद माताजी नाम से विख्यात है। यहां पहुंचने के लिए निकटस्थ रेल्वे स्टेशन नागौर, डीडवाना, डेगाणा है। यहां से माताजी एवं जायल के लिए बसें मिलती हैं। यह जायल से 12 किमी है।

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

मां भगवती दधिमथी

गोठमांगलोद के अभिषेक का स्थान

गुड़, नारियल 2, जनेव जोड़ा 4, सिन्दूर 100 ग्राम, चांदी का बरक 40 छोटा सा या 20 बड़ा, धीरत 250 ग्राम, शहद, शक्कर 1 किलो, दूध सवा 5 किग्रा, सुपारी 10, मोली कूंकूं चावल, केसर, धूप, अगरबत्ती, कपूर, अत्तर की शिशी।

भगवती की पोशाक

ओढ़णी (साड़ी) साढ़े 5 फिट लंबा एवं साढ़े 5 फिट चौड़ा

लहंगा 10 फिट घेर, लंबा ढाई फिट, नेफा ढाई फिट

चोली लंबाई, चौड़ाई डेढ़ मीटर

लाल रंग सफेद असार बीच में

❖ ❖ ❖ ❖ ❖

कपाल पीठ तीर्थ की परिचय पत्रिका

(1.) प्रजापति दक्ष के यज्ञ में भगवान शंकर का अपमान होने पर महर्षि दधिची ने यज्ञ शाला का तिरस्कार यह कहते हुए कि यहां भयंकर अनर्थ होने वाला है, शीघ्र अपने आश्रम को लौट आए। पतिदेव का अपमान और पिता द्वारा शंकर की निन्दा सुन सती ने यज्ञ कुण्ड में प्रवेश किया और रुद्रगणों ने उपरिथित ऋषि मुनियों को दण्ड देते हुए दक्ष का सिर धड़ से उड़ा पूर्णाहूति कर, यज्ञ विघ्वन्स कर चले गए। भगवान शंकर तो समाधि में थे। नारद द्वारा समाचार सुन चिन्तित हुए वे अपने को संभाल नहीं सके तुरंत दौड़ सती के शव को कंधे पर रख चिन्तातुर भ्रमण करते फिरे। जहां जहां सती के अंग के भाग गिरे वे सब महासती के प्रभावशील तीर्थ बन गए। महासती का कपाल पुष्करारण्य क्षेत्र के महावन बत्तीस कोस उत्तर में जहां भयंकर झाड़िया थी। जहां अब गोठ मांगलोद के दो गांवों के बीच का स्थान है, वहां महासती का कपाल गिरा। यहां राजा मानधाता ने वशिष्ठ मुनि की आज्ञा से महर्षि दधिची के 144 पौत्रों को आचार्य चरण कर हजारों ऋषियों के साथ महावन को कटवाकर यज्ञ किया गया, वहीं यज्ञ कुण्ड अब जल कुण्ड में देवी के प्राकट्य के समय राजा और आचार्यों के प्रार्थना पर, इस स्थान का प्रभाव रखने हेतु परिणत देवी कृपा से हुआ। यही कपालपीठ तीर्थ भुक्ति मुक्ति को देने वाला और दाधीच वंश की कुल देवी का स्थान है। यह त्रेतायुग का स्वर्णमयी युग है।

(2.) द्वापर में पाण्डव जब वनवासी हुए तो अज्ञातवास में कुछ समय इस तपोभूमि में रहकर अपने कष्टों का निवारण करने हेतु महामाया से प्रार्थना करी, पाण्डव इस कपालपीठ तीर्थ से बहुत प्रभावित हुए।

(3.) कलियुग एक विष्णुदास ब्रह्मचारी, ये पंडित दाधीच वंश भूषण मेवाड़ निवासी श्री बलदेवजी के पुत्र थे। ये इसी पवित्र भूमि में पधारे तो इस स्थान को देख बड़े हर्षित हुए, चकित हुए जहां आकाशवाणी होकर धरती फटी, सिंह की गर्जना हुई, गाये चरती हुई भयभीत हो भागी, ग्वाला चिल्लाया अरे क्या निकल रहा है वहीं सती का कपाल मंदिर के गुम्बज सहित राजा मानधाता निर्मित पुनः समय पाकर निकल आया

आकृती भूमिका

था। लोग दौड़े आश्चर्य चकित हुए किन्तु सिंह के भय से रात को कोई नहीं ठहरे। पास के गांव का एक पुजारी सदा आता और पूजा कर चला जाता। ब्रह्मचारीजी पुजारी के पास गए और कहा— मैं ठहरना चाहता हूं तुम मेरे पास रहो तो पुजारी ने कहा रात को सिंह घूमता है मेरी हिम्मत नहीं। ब्रह्मचारीजी ने कहा सिंह तो भगवती का वाहन है, रक्षा के लिए इस उपवन में रहता है, हम मां के बालक हैं, बालकों की रक्षा मां करती है, इस तरह समझा पुजारी को, ब्रह्मचारीजी वहां रह, अधर रत्नम के निकट बैठ तीन पुरश्चरण किए। स्वप्न में आज्ञा हुई तुम उदयपुर महाराणा के पास जाओ। ब्रह्मचारीजी उदयपुर पथारे वहां जंगल में जा रहे थे, तब एक लड़के को पेड़ पर लकड़ी काटते हुए देखा, ब्रह्मचारीजी ने कहा लड़के तेरे भाग्योदय हो गए हैं, मां भगवती की कृपा से तुम कल उदयपुर महाराणा की गददी पर बैठोगे, उसने का महाराज खाने को तो घर में कुछ नहीं है, मैं गरीब का लड़का हूं ऐसा कहां भाग्य है। ब्रह्मचारीजी उदयपुर पथारे वहां विश्राम किया वहां राजगददी के लिए दो में संघर्ष चल रहा था। निर्णय प्रजा ने किया कि जो प्रातः जंगल में पहले मिले उसे ही गददी पर बैठा दिया जाए। कपाल पीठेश्वरी भगवती की कृपा से वही लड़का जिसको ब्रह्मचारीजी ने भविष्य संदेश सुनाया था उसका नाम रवरूप सिंह था। मां की कृपा से भाग्योदय हो कर उदयपुर राजगददी पर सुशोभित हुआ। उसने ब्रह्मचारीजी की खोज करवाई, बुलाया स्वागत कर कहा बताइये मेरे पर किसकी कृपा हुई है। मैं उसका दर्शन करना चाहता हूं। ब्रह्मचारीजी महाराणा को कपाल पीठेश्वरी भगवती जगदंबा के दर्शन करवाये। महाराणा भगवती को देख रो पड़े। करुणा करने वाली मां स्वप्न में भी कभी आशा नहीं थी जिस पद व राज्य को तूने दिया है मां मैं तुझे कभी नहीं भूल सकता। महाराणा ने जोधपुर नरेश को इस स्थान का प्रभाव बताया और बनारण्य जंगल को कटवा कर विशाल खंभो के रवित पुरातन महामंदिर की शोभा जहां ब्रह्मचारीजी ने पुरश्चरण किया था देख उस स्थान में चार चौक, चार दरवाजे, मण्डप स्थान महाकुण्ड, चार दिवारी, यात्रियों के आवास के स्थान सचिव को भेज बनवाये। यह सारा कार्य विक्रमीय सम्बत 1903 में हुआ और श्री विष्णुदासजी ने पुनः यहां पधार कर 18 पुरश्चरण और किए।

मोहम्मद गजनवी- संवत् 1231 में मेवाड़ के महाराणा द्वारा भवन निर्माण के बहुत पूर्व कपाल पीठ तीर्थ पर आकर कपाल को तोड़ने की इच्छा की उसी समय उस महा बन के काले काले भंवरो ने बादशाह पर तीव्र आक्रमण किया। तोबा तोबा कहकर बादशाह भगा, दिमाग ठीक होने पर यह आदेश दिया कि इस पर एक बड़ी शिल्ला रख दो ताकि मेरे यहाँ की याद बनी रहे। तब सिपाहियों ने कम्बले ओढ़ ओढ़ कर शिला कपाल पर रख दी बाद में बादशाह को अफसोस हुआ। हाथ जोड़कर क्षमा मांगी और उस बनारण्य का पट्टा मां के नाम कर गया। कपाल शिला के स्पर्श होते ही कपाल 672 वर्ष गुप्त रही। सं. 1903 में शिला के 3 टुकड़े स्वतः ही हो गए। जो अवशेष अब भी पड़े हैं, कपाल 1903 में पुनः प्रकट हुई। बादशाह ने इसके प्रभाव को समझा तो 170 वर्ष तक नीचे के स्थान को हिन्दु और उपर शिला को मुसलमान पूजते रहे।

जोधपुर नरेश महाराजा सरदार सिंह जी की महारानी जी 1980 वि. भयंकर बिमारी से ग्रसित होने पर मां की आराधना उपासना करने पर पूर्ण स्वरथ हुई और 1981 विक्रमीय में रामकरण जी आसोपा को भेजकर तीस हजार रुपये मंदिर में लगाये। दक्षिणी चारदीवारी में तिबारे यात्रियों के लिए बनवाए। माताजी की अखंड जोत करवाई।

1. केसरी चंद जयचंद लाल भूनेड़िया लाडनूं वर्तमान मालचंदजी सत्तर वर्ष सं. 1994 विक्रमीय से चार किलो धी बराबर भेज रहे हैं।
2. माईजी भगवती के भण्डार से अखण्ड जोत सदा रहती है।

बड़ी नौपत- सं. 1904 में मेड़ता सिटी के मुसलमान मजिस्ट्रेट के द्वारा सहर्ष भेट। महर्षि दधिची का पावन आश्रम जहाँ महर्षि ने देवताओं द्वारा संपूर्ण तीर्थों का जल मंगा स्नान कर अपने पावन शरीर का दान दिया था। वह नेमीषारण्य क्षेत्र दधिची ऋषि आश्रम मिश्रित तीर्थ से प्रसिद्ध संपूर्ण कामनाओं और पितरों को मुक्ति देने वाला कहलाया। यह स्थान आगरा से कानपुर लखनऊ रेलवे मार्ग से बालामऊ स्टेशन के समीप है। तीर्थ यात्री मिश्रित तीर्थ को देखकर महर्षि दधिची के पावन नाम से बड़े प्रभावित होते हैं। करदम ऋषि बड़े तपस्वी और तेजस्वी ज्ञान के भंडार थे। स्वयंभूव मनु की कन्या देवहृतिजी आपको अर्पित की

आश्वती भृंगह

गई थी। उससे नौ कन्याएं उत्पन्न हुईं जो ब्रह्मा की आज्ञा से उनके नौ मानस पुत्रों को भेट की। जो महान् तपस्या की मूर्ति थी। इनसे एक महाज्ञानी कपिलदेव पुत्र हुआ जिसने पिता के तपस्या में जाने के बाद ज्ञान दिया। आपक नाम कपिल देव मुनि हुआ। बीकानेर के पास कोलायत में आपने कड़ी तपस्या की थी जिसके कारण कोलायत तीर्थ कहलाता है।

✽ ✽ ✽ ✽ ✽

दधिमथी (भगवती) चालीसा

ध्यानम्

ओऽम् भुर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियोयोनः प्रचोदयात् ।

॥ दधिमष्टै नमः ॥

चन्द्र छटा सी शोभती, दधिमथी जगदंब
सकल जगत् को पोखती, दे माता अवलम्ब ॥ 1 ॥

विष्णु शिवा मनमोहिनी, लोचन भव्य ललाम
दिव्य स्वरूप सुहासिनी, कोटि कोटि प्रणाम ॥ 2 ॥

जय दाधिचों की कुल माता, करुणा ममतामय परित्राता ॥ 3 ॥

सर्व मंगले हे महतारी, अणु अणु में शक्ति संचारी ॥ 4 ॥

रूप मनोहर मंगलकारी, मन तन के सब संकट हारी ॥ 5 ॥

सुघड़ नाक में नथली राजे, अधर गुलाबी सुंदर साजे ॥ 6 ॥

गले विराजत मुक्ता माला, नयन सुशोभित कंचन प्याला ॥ 7 ॥

बिन्दी भव्य ललाट सोहती, रूपल मात विश्व मोहती ॥ 8 ॥

मां के सिर पर छत्र विराजे, झालर शंख नगाड़े बाजे ॥ 9 ॥

हुए आरती सांझ सवारे, दर्शन कर धन भाग्य हमारे ॥ 10 ॥

जय जय हे जय जगज्जननी, कर्मशील जय विव भरनी ॥ 11 ॥

तेरे रूप अनेको माता, जय मां सबकी भाग्यविधाता ॥ 12 ॥

वज्र समान है शक्ति शालिनी, देवी दुःख दारिद्रय दालिनी ॥ 13 ॥

चामुण्डा मां सिंह वाहिनी, दानव दैत्य दुष्ट वाहिनी ॥ 14 ॥

हाथ खड़ग त्रिशूल धारिणी, नहीं किसी से कभी हारिणी ॥ 15 ॥

आृती व्यंग्य

सरस्वती मां वीणा वादिनी, हृतंत्री के नाद नादिनी ॥ 16 ॥
 धूप दीप कर भोग लगावें, वह कष्टों से मुक्ति पावे ॥ 17 ॥
 पुष्प चढ़ाकर करें आरती, उनके सब दुःख अम्ब टारती ॥ 18 ॥
 जय जय जय कुलदेवी माता, दधिमथी मां सबकी त्राता ॥ 19 ॥
 निशि दिन तेरा नाम सुहाता, जो लेता वह सब सुख पाता ॥ 20 ॥
 रोग शोक उनके मिट जाते, जो मां का चालीसा गाते ॥ 21 ॥
 जो लख बार पढ़े चालीसा, सिद्धि मिले साखी गौरीसा ॥ 22 ॥
 अमर सुहाग वधु को मिलता, कन्या को वाछित वर मिलता ॥ 23 ॥
 भरे मात भण्डारे खाली, ऐसी गोठ मांगलोद वाली ॥ 24 ॥
 अमृत वर्षा कर देती मां, अन्न धन से घर भर देती मां ॥ 25 ॥
 बल विद्या बुद्धि देती मां, सारे कष्ट हटा देती मां ॥ 26 ॥
 सुख दाता माता दुःख हर्ता, अग जग पालन कर्ता भर्ता ॥ 27 ॥
 मां की महिमा है अति भारी, तीन लोक में सबसे न्यारी ॥ 28 ॥
 माता सदा सदा सुख दायी, भक्तों को देती प्रभुताई ॥ 29 ॥
 दिग्दिगंत है मां की चर्चा, खुद सुरगण भी करते अर्चा ॥ 30 ॥
 तू दुर्गा तू ही गायत्री, गौरी लक्ष्मी तू ही सावित्री ॥ 31 ॥
 वेद ऋचाओं ने भी गाया, समझ न आवे मां की माया ॥ 32 ॥
 मां आशीष उसे ही देती, जो भक्ति की करते खेती ॥ 33 ॥
 सुधा वर्षिणी विश्व मोहिनी, नव दुर्गा में श्रेष्ठ सोहिनी ॥ 34 ॥
 काम कोध मद लोभ हटा दो, जगदम्बे दुःख क्षोभ मिटा दो ॥ 35 ॥
 दधिमथी जय मंगलकारी, जगदंबे मां भवभयहारी ॥ 36 ॥
 अंबा को जो कोई ध्यावे, उसके सब संकट कट जावे ॥ 37 ॥
 कृपा करो हे दधिमथी माता, श्रीमन्त तो तेरे गुण गाता ॥ 38 ॥
 मां हमको बस कृपा चाहिए, सब पर शीतल नजर चाहिए ॥ 39 ॥
 जो मां का सुमिरन करे, दधिमथी उसकी ढाल,
 दुःख दारिद्रता को मिटा, अंबा करे निहाल ॥ 40 ॥



अभिलाषा

दधिमथी तेरे चरणों की, अगर धूल जो मिल जावे।

आकृती स्थंग्रह

सच कहता हूँ मेरी—2, तकदीर बदल जावे ॥ दधिमथी..... ॥
सुनते हैं तेरी रहमत, दिन रात बरसती है।
इक बूँद जो मिल जावे, दिल की कली खिल जावे ॥ दधिमथी..... ॥
ये मन बड़ा चंचल है, कैसे मैं तेरा भजन करूँ ।
जितना इसे समझाऊँ—2, उतना ही मचल जाये ॥ दधिमथी..... ॥
नजरों से गिराना ना मुझे, चाहे जितनी सजा देना ।
नजरों से जो गिर जाये, मुश्किल है फिर संभल पाना ॥ दधिमथी..... ॥
मैया इस जीवन की बस, एक तमन्ना है।
तुम सामने हो मेरे—2, मेरा दम ही निकल जावे ॥ दधिमथी..... ॥

✽ ✽ ✽ ✽ ✽

नागौर से माताजी के लिए बस आने का साधन

सुबह नागौर से—सुबह 6 बजे नागौर से दिल्ली वाया गोठ मांगलोद ।
सुबह 7 बजे नागौर से परबतसर वाया गोठ मांगलोद ।
सुबह 9 बजे नागौर से खारी वाया गोठ मांगलोद ।
सुबह 12 बजे नागौर से परबतसर वाया गोठ मांगलोद ।
दोपहर— दोपहर 2 बजे नागौर से परबतसर वाया गोठ मांगलोद ।
दोपहर 4 बजे नागौर से खारी वाया गोठ मांगलोद ।
दोपहर 5 बजे नागौर से माताजी वाया गोठ मांगलोद ।
सांय— सांय 6 बजे नागौर से खारी वाया गोठ मांगलोद ।

✽ ✽ ✽ ✽ ✽

मूँडवा से माताजी के लिए बस आने का साधन

सुबह— सुबह 9 बजे मूँडवा से डीडवाना वाया गोठ मांगलोद ।
सुबह 11 बजे मूँडवा से डीडवाना वाया गोठ मांगलोद ।
दोपहर— दोपहर 3.30 बजे मूँडवा से डीडवाना वाया गोठ मांगलोद ।

✽ ✽ ✽ ✽ ✽

जायल से नागौर वाया माताजी

सुबह— सुबह 6.30 बजे जायल से नागौर वाया गोठ मांगलोद ।

सुबह 8.30 बजे माताजी से नागौर वाया गोठ मांगलोद ।
 सुबह 9.30 बजे माताजी से नागौर वाया गोठ मांगलोद ।
 सुबह 11 बजे माताजी से नागौर वाया गोठ मांगलोद ।
दोपहर—
 दोपहर 1 बजे माताजी से नागौर वाया गोठ मांगलोद ।
 दोपहर 3 बजे जायल से मूँडवा वाया गोठ मांगलोद ।
सांय—
 दोपहर 4 बजे जायल से नागौर वाया गोठ मांगलोद ।
 सांय 5 बजे जायल से नागौर वाया गोठ मांगलोद ।
 सांय 6.30 बजे दिल्ली से नागौर वाया गोठ मांगलोद ।



तरनाऊ से माताजी

सुबह— सुबह 10.30 तरनाऊ से नागौर वाया माताजी ।

संध्या— संध्या 5.30 तरनाऊ से नागौर वाया माताजी ।

नजदीक रेल्वे स्टेशन— नागौर, डेगाना, मेड़ता, डीडवाना ।

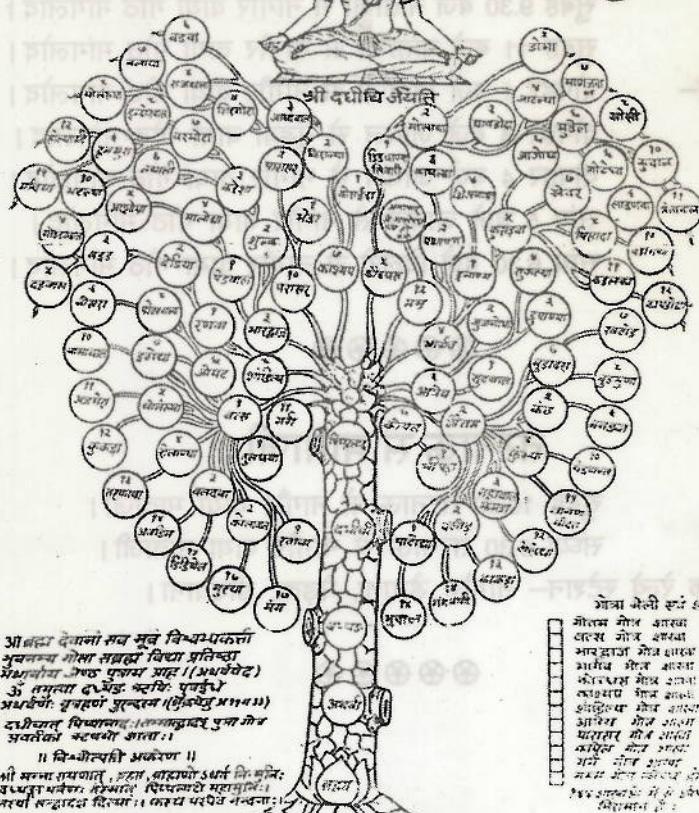


ग्रन्थ प्रियंकाराम

ग्रन्थालै फ्रीम लिंगर के ग्रन्थालै ठाई लिंगराम लिंगर
 । है ग्राम रिक्त ग्राम हि हि लघु ग्रन्थी ग्रामालै

आकृती संग्रह

श्री दधीचि वंश वृक्ष



महत्वपूर्ण सूचना

दधिमती माताजी गोठ मांगलोद के प्राचीन मंदिर में ब्राह्मण पाराशर परिवार शुरू से ही पूजा करते आए हैं।





मां दधीमति का मनोकामना अधर खम्ब

गोपालकृष्ण

पाराशर

पुजारी गोठ मांगलोद
रुद्राक्ष व
अष्टधातु के
लिए सम्पर्क करें-
9414863841



जगदीश प्रसाद

मैनेजर
श्री दधीमति
माताजी सेवा
पूजा-अर्चना
समिति,
गोठमांगलोद





शवितपीर का क्षेत्र



गोर मांगलोद श्री दधिमती माता का भव्य मंदिर

मुद्रक: जमेश्वर ऑफसेट प्रेस

दुकान नं. 5 अण्डरग्राउण्ड भास्कर मार्केट, नागौर

01582-241136
092141-18849

Designed by: Ramprasad Bishnoi